कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Registered Postal Regn. No.MP/Bhopal/143/2025-27 RNI No. 1832/57 डाक प्रेषण का दिन - सोमवार, मंगलवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 भोपाल, प्रकाशन - सोमवार, 29 सितम्बर 2025 वर्ष-80 अंक - 5 मूल्य-रु. 12/- कुल पृष्ठ-16 www.krishakjagat.org

गेहूं, धान के बाद अब सोयाबीन किसानों को राहत दी सरकार ने

भावांतर योजना होगी लागू

भोपाल (कृषक जगत)। प्रदेश में सोयाबीन किसानों को नुकसान से बचाने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भावान्तर भुगतान योजना लागू करने की घोषणा की है। इसके तहत एमएसपी और विक्रय के अंतर की राशि का भुगतान किया जाएगा। किसानों के प्रति संवेदनशील मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कलेक्टरों को निर्देश दिए हैं कि कोई भी पात्र किसान लाभ से वंचित न रहे।

(विस्तृत समाचार पृष्ठ 3 पर देखें)

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

श्रेष्ठ कृषि पत्रकारिता के लिए चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

भाकृअनुप ICAR

नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओ, प्रतिनिधियों एवं शुभचिंतकों को नवरात्रि एवं दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- कृषक जगत परिवार

146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स की सूची पृष्ठ 10 पर देखें.

ऑफ़र के लिए मिस्ड कॉल दें
08037749101

यह योजना मध्य प्रदेश महिंद्रा डीलरशिप द्वारा संचालित है और महिंद्रा इस योजना संबंधित किसी भी मुद्दे या क्षति के लिए जिम्मेदार नहीं है।
दिखाए गये उपहार केवल प्रतिनिधित्व के लिए हैं। वास्तविक इनाम/उपहार अलग हो सकते हैं। नियम व शर्तें लागू। अधिक जानकारी के लिए, अपने नज़दीकी महिंद्रा अधिकृत डीलर से संपर्क करें।
*RTO, इंश्योरेंस और एक्सेसरीज़ शामिल नहीं हैं। दिखाई गई कीमतों में जीएसटी के फायदे शामिल हैं।
**क़ीमत चुने गए मॉडल और वेरिएंट के अनुसार बदल सकती है। सभी महिंद्रा ट्रैक्टर की रेंज (15 HP-75 HP) पर उपलब्ध। नियम व शर्तें लागू

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

क्रॉपलाइफ इंडिया ने रखा 1 ट्रिलियन डॉलर कृषि अर्थव्यवस्था का रोडमैप

नेशनल कॉन्फ्रेंस 2025 में सरकार, उद्योग और वैज्ञानिकों ने मिलकर तय की भविष्य की दिशा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। क्रॉपलाइफ इंडिया ने अपनी 45वीं वार्षिक आम बैठक (AGM) के साथ नेशनल कॉन्फ्रेंस 2025 का आयोजन किया। इसमें **केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान**, नीति-निर्माता और उद्योग जगत के प्रतिनिधि शामिल हुए। सम्मेलन का उद्देश्य था - विकसित भारत 2047 के लक्ष्य में कृषि और फसल संरक्षण की भूमिका पर चर्चा।

उद्घाटन संबोधन में कृषि मंत्री ने कहा कि किसान देश की आत्मा हैं और उनकी सेवा करना ईश्वर की सेवा है। उन्होंने कहा कि भारत खाद्यान्न की कमी से निकलकर अब आत्मनिर्भर और निर्यातक बन चुका है।

उन्होंने चेताया कि 2050 तक देश की जनसंख्या 170 करोड़ तक पहुँच सकती है, ऐसे में खाद्य और पोषण सुरक्षा सबसे बड़ी चुनौती होगी।

नवाचार और जिम्मेदारी का संतुलन

डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, अध्यक्ष, पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV&FRA) ने कहा कि हरित क्रांति ने भारत को खाद्य सुरक्षा और आत्मविश्वास दोनों दिए हैं। देश 65 मिलियन टन अनाज उत्पादन से 350 मिलियन टन तक पहुँचा है और बागवानी ने इसे भी पीछे छोड़ दिया है।

2 लाख करोड़ का नुकसान रोकें

क्रॉपलाइफ इंडिया के अध्यक्ष श्री अंकुर अग्रवाल ने कहा कि भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कृषि उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक है, जिसकी वार्षिक निर्यात क्षमता लगभग रु. 40,000 करोड़ है।

उन्होंने बताया कि भारत हर साल कीट और बीमारियों से लगभग रु. 2 लाख करोड़ की फसलें गंवाता है। दिलचस्प तथ्य यह है कि भारतीय किसान औसतन 400 ग्राम/ हेक्टेयर कीटनाशक इस्तेमाल करते हैं, जबकि वैश्विक औसत 8,000 ग्राम है। यह साबित करता है कि भारतीय किसान दक्ष हैं और अति-उपयोग नहीं करते।

श्री अग्रवाल ने कहा कि क्रॉपलाइफ इंडिया के सदस्य देश के 70 प्रतिशत से अधिक कारोबार का प्रतिनिधित्व करते हैं और वैश्विक फसल संरक्षण के 95 प्रतिशत रसायनों और अणुओं में योगदान करते हैं। उन्होंने वादा किया कि उद्योग जिम्मेदार नवाचार, प्राकृतिक खेती के समर्थन और कीकृत कीट प्रबंधन को आगे बढ़ाएगा।

साझेदारी से बनेगा मजबूत भविष्य

सम्मेलन में समग्र चर्चा हुई कि नियमों और राज्य स्तर पर पालन की जटिलताओं को आसान बनाना जरूरी है। साथ ही, सतत कृषि के लिए कीटनाशकों की भूमिका पर भी विचार किया गया।

बीज उद्योग में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस सुधार से सालाना रु. 800 करोड़ की वृद्धि संभव

नई दिल्ली (कृषक जगत)। फेडरेशन ऑफ सीड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (FSII) ने कहा है कि अगर बीज उद्योग में नियम आसान किए जाएं और 'ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस' पर ज़ोर दिया जाए, तो हर साल रु. 800 करोड़ से अधिक का अतिरिक्त आर्थिक मूल्य पैदा किया जा सकता है। इससे किसानों तक बेहतर बीज समय पर पहुंचेंगे और भारत की वैश्विक बीज व्यापार में हिस्सेदारी 1 प्रतिशत से बढ़कर 2035 तक 10 प्रतिशत तक पहुँच सकती है।

यह रिपोर्ट, 'भारतीय बीज उद्योग में व्यापार करने में आसानी', FSII की 9वीं वार्षिक आम बैठक में जारी की गई। रिपोर्ट के अनुसार, नियमों में सुधार से बीज कंपनियां हर साल 3-5 नई किस्में बाजार में ला सकती हैं और R&D निवेश बढ़ा सकती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, जटिल नियमों और देरी के कारण बीज उद्योग को हर साल करीब रु. 300 करोड़ का नुकसान होता है। लाइसेंसिंग और रजिस्ट्रेशन की बाधाएं खासकर MSMEs को प्रभावित करती हैं।

पीपीवीएफआरए के चेयरपर्सन डॉ. त्रिलोचन महापात्रा ने कहा कि मजबूत बौद्धिक संपदा (IP) ढांचा और समय पर मंजूरी किसानों तक तकनीक पहुंचाने की कुंजी है। वहीं, कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव (बीज) अजीत के. साहू ने बताया कि सरकार नियमों को सरल बनाने और अलग-अलग कानूनों को मिलाकर नया ड्राफ्ट सीड बिल लाने पर काम कर रही है।

रिपोर्ट के खास बिंदु

- सरल नियमों से रु. 800 करोड़ की अतिरिक्त वृद्धि संभव
- वैश्विक बीज व्यापार : 2035 तक 10 रु. हिस्सेदारी का लक्ष्य
- नई किस्में आएँगी बाज़ार में
- नियमों से हर साल 300 करोड़ का घाटा
- R&D में 15 प्रतिशत तक बढ़ोतरी संभव
- किसानों की मांग - जीएम फसलें

ICAR के सहायक महानिदेशक (बीज) डॉ. डी. के. यादव ने पब्लिक-प्राइवेट सहयोग की अहमियत बताई। FSII अध्यक्ष अजय राणा ने कहा कि नियमों की बाधाओं से बीज कंपनियों को हर साल 800 करोड़ रुपये का नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि 'अगर लाइसेंसिंग को एकीकृत कर दिया जाए और प्रक्रियाएं डिजिटाइज हों, तो उद्योग को रु. 382-708 करोड़ की बचत होगी, R&D में 15 प्रतिशत तक वृद्धि होगी और भारत वैश्विक बीज बाजार में बड़ा हिस्सा हासिल कर सकेगा।'

जैविक उत्पादों को विश्वसनीय बनाने, उद्योग को करना होगा ठोस प्रयास : BASAI 2025

नई दिल्ली (कृषक जगत)। 'बायोलॉजिकल्स फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर-ए क्लाइमेट रेजिलिएंट अप्रोच' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन BASAI 2025 में नई दिल्ली में कृषि मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी और उद्योग जगत के प्रतिनिधि एकत्र हुए। सम्मेलन का आयोजन बायोलॉजिकल एग्री सॉल्यूशंस एसोसिएशन ऑफ इंडिया (BASAI) ने किया।

सम्मेलन ऐसे समय में हुआ जब कृषि मंत्रालय ने बायोस्टिमुलेंट्स की गुणवत्ता और नकली उत्पादों को लेकर चिंता जताई है। वहीं दूसरी ओर, भारत का जैविक उत्पाद क्षेत्र तेज़ी से बढ़ रहा है। एसोसिएशन के अनुसार, बायोस्टिमुलेंट्स का बाजार 2022 के 410.78 मिलियन डॉलर से बढ़कर 2032 तक 1,135.96 मिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। बायोफर्टिलाइजर्स का बाजार 2033 तक 399.67 मिलियन डॉलर तक पहुंचने की संभावना है, जबकि बायोपेस्टिसाइड्स में भी लगातार दहाई अंक की वृद्धि दर्ज की है।

नियामक ढांचा और भरोसा

उद्घाटन सत्र में कृषि आयुक्त श्री पी.के. सिंह ने कहा कि भारत ने जैविक उत्पादों के लिए मजबूत नियामक ढांचा तैयार करने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। उन्होंने कहा, ये नियम किसानों तक उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद पहुंचाने, उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने और लंबे समय तक भरोसा कायम करने में मदद करेंगे।

BASAI की अध्यक्ष सुश्री संदीपा कानिटकर ने कहा कि जैविक उत्पाद उत्पादकता की खाई को भरने, मिट्टी की सेहत और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। सही नीतिगत समर्थन के साथ भारत बायोस्टिमुलेंट्स, बायोफर्टिलाइजर्स और बायोपेस्टिसाइड्स में वैश्विक नेतृत्व कर सकता है।'

निर्यात मानक और जैविक उत्पाद

डॉ. जे.पी. सिंह, अतिरिक्त पादप संरक्षण सलाहकार ने कहा कि जैविक उत्पादों के उपयोग को निर्यात मानकों से जोड़ना बेहद जरूरी है। उन्होंने APEDA के साथ सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि MRLs के उल्लंघन के कारण होने वाली अस्वीकृतियों को कम किया जा सके।

जुज़र खोराकीवाला, CMD बायोस्टैट ने कहा कि किसानों के साथ सीधा जुड़ाव ही असली प्रभाव पैदा करता है। उन्होंने कहा, '1988 में हमने सीवीड पर काम शुरू किया, लेकिन असली असर तभी पड़ा जब हम खेतों पर जाकर किसानों से सीधे संवाद करने लगे।

BASAI CEO श्री विपिन सैनी ने भी किसानों से जुड़ाव और पारदर्शिता पर जोर दिया। उन्होंने कहा, भारत के किसान हमारे खाद्य तंत्र की रीढ़ हैं। BASAI 2025 का मकसद है कि किसानों को व्यावहारिक समाधान मिले और साथ ही किसानों में जैविक उत्पादों को लेकर विश्वास भी बने।

कृषक जगत

भोपाल, सोमवार, 29 सितम्बर 2025

किसानों के लिए ढाल बनेगी डॉ. मोहन यादव सरकार

सोयाबीन किसानों को घाटा नहीं उठाने देंगे, मिलेगा भावांतर का लाभ

भोपाल (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश सरकार की पहली प्राथमिकता खेती-किसानी है। किसानों के कल्याण के लिए हर कदम उठाया जा रहा है और संकट की घड़ी में सरकार किसानों के लिए ढाल बनकर खड़ी है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सोयाबीन उत्पादक किसानों को किसी भी हालत में घाटा नहीं होने दिया जाएगा। डॉ. यादव ने कहा कि सोयाबीन का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 5328 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया है। राज्य सरकार ने निर्णय लिया है कि इस वर्ष किसानों को एमएसपी सुनिश्चित कराने के साथ-साथ भावांतर योजना का भी लाभ दिया जाएगा।

'सोयाबीन किसानों की मेहनत और पसीना व्यर्थ नहीं जाएगा। घाटा उठाने का सवाल ही नहीं है। हमारी सरकार किसानों की हर चिंता दूर करने के लिए संकल्पित है।'

- डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री म.प्र.

दोहरी मार झेल रहे हैं किसान

इस वर्ष प्रदेश के सोयाबीन किसानों को अतिवृष्टि और पीले मोजेक वायरस जैसी बीमारी ने गहरी चोट पहुँचाई है। कई जिलों में फसलें पूरी तरह चौपट हो गईं। वहीं कृषि मंडियों में सोयाबीन का भाव लगभग 4,000 रुपये प्रति क्विंटल के आसपास पहुँच गया है, जो किसानों की लागत से भी कम है। ऐसे में मध्यप्रदेश सरकार भावांतर योजना से अंतर की राशि (रू. 1328/क्विंटल तक) किसानों को सीधे देगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान पहले की तरह मंडियों में अपनी उपज बेचेंगे। यदि विक्रय मूल्य एमएसपी से कम रहता है तो घाटे की भरपाई सरकार करेगी। एमएसपी और वास्तविक विक्रय मूल्य के अंतर की राशि सीधे किसानों के खातों में दी जाएगी।

भावांतर योजना से सीधी मदद

सरकार ने स्पष्ट किया है कि यदि मंडियों में उपज का भाव राज्य सरकार द्वारा घोषित औसत मॉडल भाव से अधिक है, तो किसान को एमएसपी और विक्रय मूल्य के बीच का अंतर मिलेगा। वहीं, यदि मंडियों में भाव औसत मॉडल भाव से भी कम रहता है, तो किसान को एमएसपी और औसत मॉडल भाव के बीच का अंतर मिलेगा।

मुख्यमंत्री के प्रमुख निर्देश

- कलेक्टर और संबंधित अधिकारी किसानों का हित निश्चित करें।
- भावांतर योजना के क्रियान्वयन को प्राथमिकता दें।
- जिला स्तर पर नियमित समीक्षा भी हो।
- भावांतर योजना का प्रचार-प्रसार करें।
- सभी जनप्रतिनिधि सोशल मीडिया से प्रचार में भी सहयोग करें।
- पात्र किसान समय पर पंजीयन करवा लें।

डॉ. यादव ने कहा कि प्रभावित फसलों के लिए सर्वे करवाया जा रहा है और किसानों को आवश्यक राहत राशि दी जाएगी। उन्होंने याद दिलाया कि पूर्व में भी प्रदेश सरकार ने बाढ़ और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित किसानों को तुरंत सहायता उपलब्ध कराई थी।

10 अक्टूबर से शुरू होंगे पंजीयन

भावांतर योजना के लिए निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार प्रदेश में ई-उपार्जन पोर्टल पर पंजीयन का कार्य 10 अक्टूबर से प्रारंभ होकर 25 अक्टूबर 2025 तक चलेगा। भावांतर की अवधि 01 नवम्बर से 2025 से 31 जनवरी 2026 तक रहेगी। पंजीकृत कृषक और उनके रकबे के सत्यापन की प्रक्रिया राजस्व विभाग के माध्यम से होगी। किसानों के भावांतर की राशि पंजीयन के समय दर्ज बैंक खाते में सीधे हस्तांतरित की जाएगी।

म.प्र. सबसे बड़ा सोयाबीन उत्पादक राज्य

मध्यप्रदेश को 'सोयाबीन का बास्केट' कहा जाता है। प्रदेश में लगभग 60 से 65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सोयाबीन की बुवाई होती है। औसतन उत्पादन 55 से 65 लाख टन के बीच होता है, जो देश के कुल सोयाबीन उत्पादन का 50 प्रतिशत से अधिक है।

'एमपी चीता' ब्रांड बनेगा म.प्र. बीज संघ की पहचान

किसानों को मिलेगा गुणवत्तापूर्ण बीज

भोपाल (कृषक जगत) प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत तेजी से विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन रहा है और इसमें सहकारिता आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार बीज उत्पादन और वितरण को लेकर गंभीर है। इसी दिशा में 'एमपी चीता' नामक ब्रांड विकसित किया गया है, जो बीज संघ की पहचान बनेगा। इस ब्रांड के माध्यम से किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले उन्नत बीज समय पर उपलब्ध कराए जाएंगे। यह विचार सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने भोपाल में सहकारी बीज उत्पादक एवं विपणन संघ की वार्षिक साधारण सभा में व्यक्त किए।

श्री सारंग ने कहा कि समितियां ही 'एमपी चीता' ब्रांड की ब्रांड एंबेसडर होंगी। इसके लिए पांच वर्षों का एक्शन प्लान तैयार किया गया है तथा व्यापक प्रचार-प्रसार कर इसे राष्ट्रीय स्तर तक स्थापित किया जाएगा। सभा में सहकारिता आयुक्त श्री मनोज पुष्प, अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता, बीज संघ के प्रबंध संचालक श्री महेंद्र दीक्षित, सहित सहकारिता विभाग के वरिष्ठ अधिकारी एवं विभिन्न समितियों के सदस्य उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश मंडी बोर्ड को मिला स्कॉच अवॉर्ड

भोपाल (कृषक जगत)। नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबिटैट सेंटर में प्रतिष्ठित स्कॉच अवार्ड - 2025 मध्यप्रदेश मंडी बोर्ड, भोपाल द्वारा प्रवृत्त ई-मंडी एप को स्कॉच गोल्ड तथा एमपी फार्म गेट एप को स्कॉच सिल्वर अवॉर्ड दिया गया। पुरस्कार प्रधानमंत्री आर्थिक सलाहकार परिषद के अध्यक्ष प्रो. एस. महेंद्र देव, 15वें वित्त आयोग के अध्यक्ष श्री एन. के. सिंह, अध्यक्ष स्कॉच ग्रुप समीर कोचर द्वारा दिया गया। इसे मंडी बोर्ड के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक एनआईसी भोपाल मुशर्रफ सुल्तान, सहायक संचालक मंडी बोर्ड भोपाल श्री योगेश नागले और डॉ. निरंजन सिंह द्वारा ग्रहण किया गया।

मंडीबोर्ड को मिला 'स्कॉच अवॉर्ड 2025' मैनेजिंग डायरेक्टर श्री कुमार पुरुषोत्तम एवं अपर प्रबंध संचालक श्री अनुराग सक्सेना को भेंट किया गया।

ई-मंडी एप्लीकेशन : ई-मंडी योजना प्रदेश की सभी 259 मंडियों में क्रियाशील है। वर्तमान में 32 लाख से अधिक कृषक योजना से सीधे जुड़कर लाभ ले रहे हैं।

एमपी फार्म गेट ऐप : ऐप का उपयोग कर 8.5 लाख से अधिक कृषकों द्वारा 8.5 लाख मेट्रिक टन से अधिक विभिन्न कृषि उपज विक्रय की गई हैं।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक **विजय कुमार बोन्द्रिया** द्वारा 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल से प्रकाशित एवं कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, भोपाल (मध्य प्रदेश) से मुद्रित, **सम्पादक : सुनील गंगराड़े,** फोन : 0755-4248100, 2554864, फैक्स : 0755-2571449. E-mail-info@krishakjagat.org इस अंक का मूल्य रु. 12/- वार्षिक शुल्क रु. 600/-.भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रमांक 1832/57

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत

संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

जो मनुष्य अपने वचन पर दृढ़ रहता है, उसके बारे में मुझे कोई संदेह नहीं रहता। - महात्मा गांधी

मिलावट रूपी रावण का करें संहार

2 अक्टूबर को नवरात्रि के समापन पर दशहरा का पर्व पूरे देश में श्रद्धा, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत अर्थात् बुराई के प्रतीक रावण पर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम की विजय की स्मृति में मनाया जाता है। दशहरा के बाद बीस दिन बाद भारत सहित विश्व के अनेक देशों में दीपावली का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाएगा। पांच दिनों तक चलने वाले पावन पर्व दीपावली के दौरान सबसे ज्यादा मिठाईयों की मांग रहती है। व्यापारी और मिठाई बनाने वाले इस त्यौहर का साल भर प्रतीक्षा करते हैं। दीपावली के दौरान मिठाईयों की अत्यधिक मांग होने का फायदा मिलावटखोर उठाते हैं और बड़ी मात्रा में मिठाई बनाने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले दुग्ध उत्पाद खोवा में मिलावट करने से नहीं चूकते। इन्हीं दिनों बड़ी मात्रा में नकली और मिलावटयुक्त खोवा भी जब्त किया जाता है और यह सिलसिला कई दशकों से बदस्तूर जारी है।

मिलावटखोर नागरिकों के स्वास्थ्य की परवाह किए बिना ही खोवा और अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट करते हैं। दूध और दुग्ध उत्पादों में मिलावट से उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव तो पड़ता ही है, आर्थिक रूप से भी हानि होती है। हर साल खाद्य विभाग दीपावली के एक-दो सप्ताह पहले मिलावटखोरों के खिलाफ अभियान चलाती हैं और मिलावट व नकली दुग्ध उत्पादों को जब्त भी करती हैं। हर साल नकली और मिलावट वाला खोवा जब्त किया जाता है, जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा जाता है और कागजी कार्रवाई कर प्रशासन भी औपचारिकता पूरी कर लेता है। यदि मिलावटखोरों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होती तो सम्भवतः मिलावट और नकली खाद्य सामग्री बनाने वाले हतोत्साहित होते।

भारत में खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ़ मुख्य कानून भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 है, जो मानव उपभोग के लिए सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराने के लिए नियमों का पालन करवाता है। इसके तहत, मिलावट के मामलों में भारतीय दंड संहिता की धारा 272 और 273 भी लागू हो सकती है, जिसमें छह महीने तक की कैद या जुर्माना या दोनों की सज़ा है, जबकि गंभीर मामलों में, जैसे स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचाना, सज़ा आजीवन कारावास तक हो सकती है। मिलावट जैसे संगीन अपराध की रोकथाम केवल कानून से नहीं हो सकती। यदि ये कानून इतने कारगर होते तो भारत में मिलावट पर रोक लग गई होती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और मिलावट में कोई कमी हुई बल्कि इसमें हर साल वृद्धि हो रही है। मिलावट पर पूरी तरह रोक लगाना तो सम्भव नहीं है लेकिन कुछ हद तक सफलता मिल सकती है। खोवा मिठाई के साथ अन्य दुग्ध उत्पादों में मिलावट को रोकने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि कच्चा माल उपलब्ध कराने वाले अर्थात् दुग्ध उत्पादक किसानों और डेयरी संचालकों को आगे आना होगा। किसान और उनका संगठन.. किसान उत्पादक संघ (एफपीओ) मिलावट के खिलाफ एकजुट होकर इस बुराई को काफी हद तक ठीक कर सकते हैं ।

किसान, किसानों का समूह - एफ.पी.ओ. और डेयरी संचालक अपने - अपने स्तर पर ही शुद्ध खोवा और दुग्ध उत्पाद बनाने के लिए स्वेच्छा से आगे आ सकते हैं। बड़े कस्बे, तहसील और जिला मुख्यालय पर उपभोक्ताओं को शुद्ध दुग्ध उत्पादों की आपूर्ति के लिए किसान / किसान उत्पादक संगठन पहल कर सकते हैं। सोशल मीडिया ग्रामीण और दूर दराज के क्षेत्रों में भी आसानी से उपलब्ध है। प्रचार - प्रसार के लिए इस सशक्त माध्यम का उपयोग कर उपभोक्ताओं तक मिलावट रहित खाद्य पदार्थों की जानकारी आसानी से पहुंचाई जा सकती है। प्रत्येक शहर में किसान उत्पादक संघ, किसानों के छोटे - छोटे समूह, स्वयं सहायता समूह शुद्ध उत्पाद उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लें तो यह स्थायी रोजगार का भी साधन बन सकता है। इससे उपभोक्ताओं को शुद्ध खाद्य सामग्री तो मिलेगी ही, मिलावट करने वालों के खिलाफ एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता है।

विश्व पर्यटन दिवस 27 सितंबर

'वसुधैव कुटुंबकम' को साकार कर रहा है म.प्र. का पर्यटन : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश का पर्यटन सतत विकास के सभी मानदंडों को पूरा कर रहा है। प्राकृतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, ग्रामीण पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन के अलावा नए क्षेत्र जैसे खेल पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, जल क्रीड़ा पर्यटन, कृषि पर्यटन, इतिहास बोध कराने वाला पर्यटन भी लोगों की पसंद बनते जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदृष्टि से मध्यप्रदेश जैसे राज्यों का पर्यटन लगातार बढ़ रहा है। भारत की पूरे विश्व में साख बढ़ी है। वैश्विक पर्यटन बढ़ने से मध्यप्रदेश जैसे राज्यों को लाभ हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने पर्यटन की गतिविधि को केवल आर्थिक गतिविधि से अलग हटकर सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और पर्यावरणीय पुनर्जागरण का माध्यम बनाया है। 'वोकल फॉर लोकल', देखो अपना देश और ट्रिपल टी-टेक्सटाइल टूरिज्म और टेक्नोलॉजी जैसे नई सोच पर्यटन को विकास, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और सांस्कृतिक नवजागरण से जोड़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश के पर्यटन ने अब अंतरराष्ट्रीय मानकों की बराबरी कर ली है। मध्यप्रदेश का पर्यटन 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को साकार कर रहा है। प्रदेश में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। मध्यप्रदेश पर्यटकों की पहली पसंद बन गया है। पिछले साल तक 13.41 करोड़ पर्यटकों ने मध्यप्रदेश आने का आनंद उठाया। अकेले उज्जैन में 7 करोड़ से ज्यादा की संख्या में आध्यात्मिक पर्यटक पहुंचे।

पर्यटकों की बढ़ती संख्या

पिछले पांच सालों में मध्यप्रदेश में आने वाले पर्यटकों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वर्ष 2019 में 8.9 करोड़ पर्यटक यहां आए थे। वर्ष 2020 और 2021 में कोविड महामारी के चलते पर्यटन की संख्या वैश्विक स्तर पर यात्रा प्रतिबंधों और स्वास्थ्य संकट (कोविड) के कारण कम हुई लेकिन मध्यप्रदेश लोगों की पहली पसंद बना। वर्ष 2022 में परिस्थितियों के सामान्य होने के साथ ही पर्यटकों की संख्या में सुधार हुआ। इसके बाद 2023 में आशा अनुरूप बढ़कर पर्यटकों की संख्या 11.21 करोड़ और वर्ष 2024 में 13 करोड़ 41 हजार तक पहुंच गई।

वैश्विक धरोहरों का प्रदेश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश अब वैश्विक धरोहरों का प्रदेश बन गया है। भारत के 69 यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों में से 18 मध्यप्रदेश में है। इनमें खजुराहो के मंदिर समूह, सांची के बौद्ध स्मारक, भीमबेटका जैसे स्थल विश्व भर में भारतीय सभ्यता की गौरव गाथा को अभिव्यक्त कर रहे हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश के तीन स्थल स्थाई सूची में और 15 स्थल अस्थाई सूची में शामिल है। ग्वालियर किला, मांडू, ओरछा, चंदेरी, भेड़ाघाट, लमेटा घाट, सतपुड़ा टाइगर रिजर्व अशोक शिलालेख स्थल तथा 64 योगिनी मंदिरों की संख्या जैसी धरोहर इस सूची में शामिल है। स्पष्ट है कि मध्यप्रदेश की प्राकृतिक और ऐतिहासिक विरासत अत्यंत समृद्ध है ।

मध्यप्रदेश का पर्यटन आज बड़े पैमाने पर निवेश आकर्षित करने में सक्षम बन गया है। हाल ही में रीवा और ग्वालियर में आयोजित रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव में उत्साहपूर्वक निवेशकों ने भाग लिया और रीवा में 3000 करोड़ से ज्यादा और ग्वालियर में 3500 करोड़ से ज्यादा के निवेश प्रस्ताव मिले।

पर्यटन अधोसरंचना में सुधार

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पर्यटन की अधोसरंचना में सुधार करते हुए पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा का शुभारंभ किया है। इंदौर ग्वालियर, जबलपुर, भोपाल, रीवा, सिंगरौली उज्जैन एवं खजुराहो में शुरू हो चुका है। अब सार्वजनिक निजी भागीदारी के तहत निजी ऑपरेटर के सहयोग से राज्य के भीतर हैलीकॉप्टर सेवा संचालन भी जल्दी शुरू होगी। प्रदेश के हवाई अड्डों, हैलीपेड एवं हवाई पट्टियों के बीच निजी ऑपरेटर द्वारा चयनित स्थानों पर हैलीकॉप्टर सेवा प्रदाय की जायेगी।

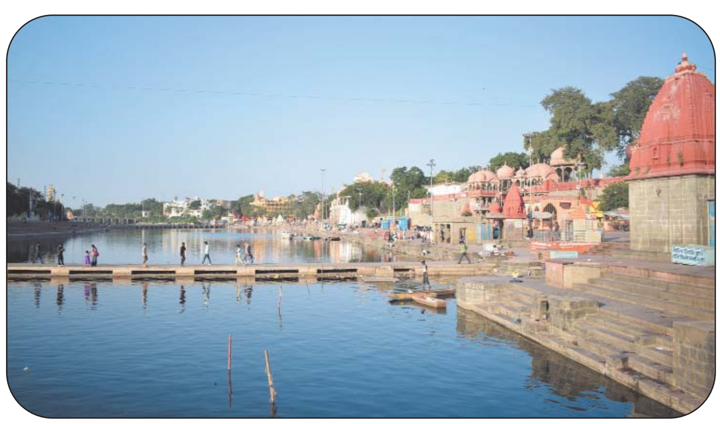

इस सेवा का उद्देश्य प्रमुख शहरों, धार्मिक स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों और पर्यटक स्थलों के मध्य निजी ऑपरेटर के सहयोग से किफायती एवं स्थायी हेलीकॉप्टर सेवा उपलब्ध कराना है। इस सेवा से यात्रियों, पर्यटकों, व्यवसाइयों, निवेशकों एवं प्रदेश के रहवासियों का प्रदेश में आवागमन सुगम हो सकेगा। इससे प्रदेश के प्रमुख व्यापारिक शहरों एवं पर्यटक स्थलों के बीच व्यवसाय एवं पर्यटन गतिविधियों में अभिवृद्धि होगी और रोजगार के नये अवसरों का सृजन भी होगा।

श्रेष्ठता का सम्मान

वर्ष 2025 मध्यप्रदेश पर्यटन के लिए उपलब्धियों का स्वर्णिम अध्याय रहा है। जनवरी में नई दिल्ली में आयोजित हॉस्पिटैलिटी इंडिया अवॉर्ड्स में प्रदेश को "Best State for Promoting Fairs and Festivals" और "Best State for Publicity" का सम्मान मिला। फरवरी में SATTE 2025 में हमें "Best State Tourism Award" प्राप्त हुआ। अप्रैल में VETA ने मध्यप्रदेश को "Leading Heritage Tourism Destination" घोषित किया। सितंबर में इंडिया ट्रैवल अवॉर्ड्स (DDP Publication) द्वारा प्रदेश को "Best State Tourism Board" का सम्मान दिया गया, वहीं द वीक पत्रिका ने हमें "Golden Banyan Award – Heritage Tourism (Best State)" से नवाजा है। अगस्त में गोवा में आयोजित MADX Summit & Awards 2025 में एमपी टूरिज्म-किडज़ानिया एक्सपीरियंस सेंटर को दो महत्वपूर्ण सम्मान—"Best E&periential Marketing Campaign" और "Best Travel & Tourism Marketing Campaign"—प्राप्त हुए। ये सभी पुरस्कार इस बात का प्रमाण है कि मध्यप्रदेश पर्यटन आज राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी नए मानक स्थापित कर रहा है।

अगेती मटर की खेती किसानों के लिए लाभकारी

- हरीश बाथम (एम.एस.सी. (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर) कृषि विद्यालय, विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- अभय प्रताप सिंह तोमर (एम.एस.सी. (कृषि) एग्रोनॉमी स्कॉलर)
- डॉ. सचिन कुमार सिंह (विभाग प्रमुख)
- डॉ. मांडवी श्रीवास्तव (सहायक प्रोफेसर)

Jiharish093@gmail.com

मटर भारत में सबसे लोकप्रिय दलहनी व सब्ज़ी फसलों में से एक है। इसमें प्रोटीन (20-22 प्रतिशत), विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। मटर का उपयोग हरी सब्ज़ी, दाने और पशु चारे के रूप में किया जाता है। यह दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करती है और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है। आजकल अगेती (early) मटर की खेती किसानों के लिए विशेष अवसर लेकर आई है। यह किस्में कम समय में तैयार होती हैं और सर्दियों की शुरुआत में ही बाजार में पहुँच जाती हैं, जहाँ हरी मटर की कीमत सामान्य से दोगुनी-तिगुनी तक मिलती है। अगेती मटर की खेती से तात्पर्य मटर की ऐसी खेती से है जो सामान्य बुवाई के मौसम (नवंबर-दिसंबर) से पहले, यानी मटर की खेती का समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक होता है। यह खेती विशेष रूप से उन किस्मों की होती है जो कम समय में पककर तैयार हो जाती हैं मटर की किस्म का चुनाव करते समय मिट्टी, जलवायु और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

अगेती मटर की विशेषताएँ

- जल्दी पकने वाली किस्में, 60-75 दिनों में तैयार।
- बाजार में सर्दियों की शुरुआत (नवंबर-दिसंबर) में ही हरी मटर उपलब्ध हो जाती है।
- फसल जल्दी निकलने से किसान रबी की अन्य फसलें जैसे गेहूँ, चना या आलू भी ले सकते हैं।
- उपज अच्छी तथा दाम ऊँचे, इसलिए लाभ दुगुना।

प्रमुख किस्में

अर्का अजीत, अर्का प्रगति, अर्का कार्तिक, IPFD-1, अजीत-1, पी.ई.एस. 10, पंत मटर 155,काशी अगेती, काशी पूर्वी, काशी नंदिनी, काशी शक्ति, पंत मटर 155, अर्ली बैजर, आर्केल, पंत मटर 13, जवाहर मटर आदि। अगेती मटर की कुछ उन्नत किस्में हैं।

पोषण और खाद प्रबंधन

मटर दलहनी फसल होने के कारण वायुमंडल से नाइट्रोजन स्थिर करती है, फिर भी बेहतर वृद्धि और उत्पादन के लिए पोषण एवं खाद प्रबंधन जरूरी है। बुवाई से पहले खेत में 15-20 टन अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद डालें जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे। रासायनिक उर्वरकों में सामान्यतः 20 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फॉस्फोरस और 40 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर दें, जिसमें आधी नाइट्रोजन और पूरा फॉस्फोरस-पोटाश बुवाई के समय बेसल डोज़ के रूप में दें और शेष नाइट्रोजन 25-30 दिन बाद टॉप ड्रेसिंग करें। इसके साथ ही राइजोबियम तथा फॉस्फेट घुलनशील जीवाणु (पीएसबी) से बीज उपचार करने पर दाने की उपज और गुणवत्ता दोनों बढ़ती है। सल्फर 20 किग्रा प्रति हेक्टेयर देने से भी दानों की गुणवत्ता और प्रोटीन मात्रा में सुधार होता है।

बुवाई का सही समय और तरीका

अगेती मटर की बुवाई का सही समय सितंबर माह के अंत से अक्टूबर के मध्य तक माना जाता है, क्योंकि इस अवधि में तापमान अनुकूल रहता है और फसल जल्दी तैयार होकर ऊँचे दाम दिलाती है। बुवाई के लिए बीज की मात्रा 70-80 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर पर्याप्त होती है। बुवाई कतारों में करें, जहाँ कतार से कतार की दूरी लगभग 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेंटीमीटर रखी जाती है। बीज बोने से पहले उन्हें राइजोबियम और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करें ताकि जड़ों में गांठें अच्छी तरह बनें और रोगों से सुरक्षा मिले। बीजों को 3-5 सेंटीमीटर गहराई पर बोना उचित होता है, जिससे अंकुरण समान और मजबूत होता है।

अगेती मटर की खेती में सिंचाई प्रबंधन

- मटर में सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह रबी मौसम की फसल है।

पहली सिंचाई - बुवाई के 15-20 दिन बाद करें, जब पौधों की जड़ें जम रही हों।

दूसरी सिंचाई - फूल आने की अवस्था में करें; यह सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि नमी की कमी से फूल झड़ जाते हैं।

तीसरी सिंचाई - फलियों के बनने के समय दें; इससे फलियों का आकार और दाना भराव अच्छा होता है।

चौथी सिंचाई - आवश्यकता पड़ने पर दानों के भरने की अवस्था में करें।

- ध्यान रखें कि खेत में पानी कभी भी खड़ा न हो, क्योंकि इससे जड़ सड़न और फ्यूजेरियम विल्ट जैसी समस्याएँ आती हैं।
- हल्की और समय पर सिंचाई से उपज 20-25 प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

अगेती मटर में खरपतवार प्रबंधन-

- मटर की फसल में शुरुआती 30-40 दिन सबसे महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस समय खरपतवार तेजी से बढ़ते हैं और पोषक तत्व, नमी व धूप छीन लेते हैं।

पहली निराई-गुड़ाई - बुवाई के 20-25 दिन बाद।

दूसरी निराई-गुड़ाई - लगभग 40 दिन पर करें।

मल्चिंग - खेत में पुआल/फसल अवशेष बिछाने से खरपतवार की वृद्धि कम होती है और नमी भी बनी रहती है।

रासायनिक नियंत्रण - बुवाई के तुरंत बाद पेंडीमेथालिन 1.0 लीटर प्रति हेक्टेयर 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

- खरपतवार नियंत्रण करने से फसल की पैदावार में 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है।

अगेती मटर की तुड़ाई और उपज

पहली तुड़ाई का समय- अगेती मटर की किस्में बुवाई के 60-75 दिन बाद तोड़ाई योग्य हो जाती हैं।

तोड़ाई की अवस्था- फलियाँ जब हरी, कोमल और दाने दूधिया अवस्था में हों तब तोड़ाई करें, क्योंकि इसी अवस्था में दाने स्वादिष्ट और बाजार में अधिक पसंद किए जाते हैं।

तोड़ाई की विधि- फलियों को हाथ से सावधानीपूर्वक तोड़ें ताकि पौधों को नुकसान न हो और अगली तुड़ाई भी अच्छी हो।

तुड़ाई की आवृत्ति- मटर की फलियाँ एकसाथ नहीं पकतीं, इसलिए 3-4 बार अंतराल से तुड़ाई करनी पड़ती है।

हरित फली उपज- 80-100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हो सकती है, जो किस्म और प्रबंधन पर निर्भर करती है।

दाना उपज- यदि दाने सुखाकर उपयोग किए जाएँ तो 20-25 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज मिल सकती है।

बाजार मूल्य- अगेती मटर बाजार में जल्दी आने के कारण सामान्य मटर से ऊँचे दाम (रू. 50-70 प्रति किलो तक) दिलाती है।

भंडारण-हरी फलियाँ जल्दी खराब हो जाती हैं, इसलिए तुरन्त बिक्री करें या ठंडी जगह पर सुरक्षित रखें। दाने सुखाकर लंबे समय तक भंडारित किए जा सकते हैं।

अगेती मटर में कीट एवं रोग प्रबंधन

मुख्य कीट

एफिड (महू)- पत्तियों व कोमल फलियों का रस चूसते हैं जिससे पौधे कमजोर होकर पीले पड़ जाते हैं।

नियंत्रण- नीम आधारित कीटनाशी 5 प्रतिशत या इमिडाक्लोप्रिड 0.3 मि.ली./लीटर पानी का छिड़काव करें।

थ्रिप्स- पत्तियों पर सिल्वरिंग व सिकुड़न पैदा करते हैं।

नियंत्रण - थायोमेथोक्साम या स्पिनोसैड का छिड़काव करें।

कटवर्म- पौधों को जड़ से काटकर गिरा देते हैं।

नियंत्रण - खेत की अच्छी जुताई करें और लार्वा दिखाई देने पर क्लोरपायरीफॉस का प्रयोग करें।

मुख्य रोग

पाउडरी मिल्ड्यू- पत्तियों व तनों पर सफेद

पाउडर जैसी परत जम जाती है।

नियंत्रण - गंधक 0.2 प्रतिशत या कैराथेन का छिड़काव करें।

जंग - पत्तियों पर भूरे/गहरे धब्बे दिखाई देते हैं।

नियंत्रण- मैन्कोज़ेब 0.25 प्रतिशत या हेक्साकोनाज़ोल का छिड़काव करें।

पीला मोज़ेक - पत्तियाँ पीली होकर सिकुड़ जाती हैं, रोग एफिड से फैलता है।

नियंत्रण - रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट करें, बीज उपचार करें और एफिड का नियंत्रण करें।

जड़ सड़न/विल्ट- पौधे मुरझा जाते हैं और सूख जाते हैं।

नियंत्रण - बीज उपचार ट्राइकोडर्मा से करें और खेत में जलभराव न होने दें।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

अक्टूबर में लगाएं करौंदे के पौधे...

खूबसूरती को लगेंगे चांद

जी हां ! यदि आप घर में ही गार्डनिंग करते हैं तो अक्टूबर माह की शुरुआत में ही करौंदे के पौधे लगा सकते हैं...ये पौधे न केवल आपके गार्डन में चार चांद लगा देंगे वहीं ताजे करौंदे भी खाने के लिए मिलेंगे। कृषि जानकारों के अनुसार अक्टूबर का महीना करौंदे के पौधे लगाने के लिए श्रेष्ठ रहता है।

अक्टूबर का महीना इसे उगाने के लिए इसलिए सही माना जाता है क्योंकि इस दौरान बारिश होने के कारण मिट्टी में नमी बनी रहती है जो कि करौंदे के पौधे की ग्रोथ में मदद करता है। करौंदे का पौधा एक छोटा, झाड़ीदार पौधा है जो कि आसानी से घर में उगाया जा सकता है। इसके फलों में मौजूद विटामिन C, आयरन (Iron), और अन्य पोषक तत्व इसे शरीर के लिए बेहद ही फायदेमंद बनाते हैं। आप चाहें तो अपने बगीचे में लगे इसके स्वादिष्ट और शुद्ध फलों का इस्तेमाल जूस, अचार और चटनी बनाने के लिए भी कहा जाता है। इसके अलावा इसका इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों में भी किया जा सकता है। बता दें कि, करौंदे में मौजूद फाइबर शरीर के पाचन तंत्र को सुधारने के साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। इसके अलावा इसके सेवन से डायबिटीज और ब्लड प्रेशर को भी सुधारने में मदद मिलता है। करौंदे के पौधे को उगाने के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी को ही लें और उसमें कंपोस्ट खाद का इस्तेमाल जरूर करें। इसके बाद नर्सरी से लाए पौधों को मिट्टी में थोड़ी गहराई में लगाएं। ध्यान रहे कि पौधों के बीच की दूरी 4 से 5 फीट और कतार से कतार की दूरी 6 से 8 फीट हो। बता दें कि,करौंदे के पौधों को बढ़ने के लिए धूप की जरूरत होती है लेकिन पौधे को बहुत ज्यादा धूप से बचायें। करौंदे के पौधे को रोपाई के बाद खास खयाल की जरूरत होती है क्योंकि ये एक झाड़ीदार पौधा होता है इसलिए समय-समय पर इसकी कटाई जरूरी है। झाड़ीदार पौधा होने के कारण करौंदे के पौधे में कीट लगने का खतरा भी रहता है, जिनमें एफिड्स, थ्रिप्स, और सफेद मक्खियों जैसे कीट शामिल है। इन कीटों से पौधों को बचाने के लिए पौधे पर नीम तेल या साबुन के घोल का स्प्रे करें। बता दें कि, नर्सरी से पौधा लाकर लगाने पर आपको 3 से 6 महीने में फल मिलना शुरू हो जाते हैं।

विद्या (थूजा): कृषि और स्वास्थ्य दोनों में उपयोगी

खंडवा कृषि महाविद्यालय में शोध, स्वास्थ्य और पर्यावरण का संगम

कृषि महाविद्यालय खंडवा के अधिष्ठाता डॉ. दीपक हरि रानडे के शब्दो में-

है सजावटी पौधा, देता बड़ा ज्ञान, गुण हैं इतने, सब लें संज्ञान,
एक नाम विद्या भी इसका, कहें सब मानद विद्वान,
अंग्रेजी नाम है थूजा, इस सा नहीं कोई और दूजा,
मोरपंखी है इसका और नाम, वातावरण को शुद्ध करना इसका काम,
घना होकर प्राकृतिक बागड़ बनाये, बनती कई उत्कृष्ट दवायें,
बच्चे पत्तियों को पुस्तक में रख, कामना करते पाने की विद्या,
यही वो परम मित्र है, थूजा कहो या विद्या

कृषि में महत्व

महाविद्यालय के डॉ. मनोज कुरिल एवं डॉ. स्मिता अग्रवाल के अनुसार थूजा पौधा सामान्यतः सजावटी पौधे के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसका कृषि में भी विशेष महत्व है। इसे प्राकृतिक बाड़ के रूप में प्रयोग किया जा सकता है, जिससे फसलों को तेज़ हवाओं से सुरक्षा मिलती है। इसकी घनी पत्तियाँ मिट्टी में नमी संरक्षण और पर्यावरणीय आर्द्रता बनाए रखने में सहायक हैं। शोध स्तर पर इसे ट्रैप क्रॉप के रूप में भी अध्ययन किया जा रहा है, जिससे कीट प्रबंधन में इसके संभावित योगदान को समझा जा सके।

कृषि महाविद्यालय खंडवा के प्रांगण में लगाए गए विद्या (थूजा) पौधे परिसर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण सिद्ध हो रहे हैं। इन पौधों को महाविद्यालय के विभिन्न हिस्सों में रोपा गया है ताकि छात्र इसकी विशेषताओं को नज़दीक से समझ सकें।

औषधीय उपयोग

होम्योपैथी में थूजा का उपयोग त्वचा रोगों, सर्दी-जुकाम, और श्वसन संबंधी विकारों के उपचार में किया जाता है। इसका अर्क रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक माना गया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में इसे शरीर शुद्धि और रोग निवारण के लिए भी प्रयोग किया जाता रहा है।

धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व

थूजा का नाम ग्रीक शब्द "thuia" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'धूप' या 'यज्ञ में प्रयुक्त सामग्री।' प्राचीन काल में इसकी लकड़ी और पत्तियाँ जलाकर वातावरण को शुद्ध किया जाता था। भारत में इसे 'विद्या' और कई स्थानों पर 'मोरपंखी' भी कहा जाता है। यह पवित्रता और शुद्धि का प्रतीक माना गया है।

पर्यावरणीय महत्व

थूजा पौधा पूरे वर्ष हरा-भरा रहता है। यह परिसर की सूक्ष्म जलवायु संतुलन बनाए रखने में सहायक है। यह कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर वायु को शुद्ध करता है और प्रदूषण नियंत्रण में योगदान देता है।

डॉ. दीपक हरि रानडे ने बताया 'विद्या (थूजा) पौधे का रोपण हमारे लिए केवल सौंदर्य का साधन नहीं है, बल्कि यह वैज्ञानिक अध्ययन का विषय भी है। इस पौधे में पर्यावरणीय स्थिरता, औषधीय क्षमता और संभावित कीट प्रबंधन जैसे कई पहलुओं पर शोध की संभावना है। विद्यार्थियों को इसके माध्यम से यह समझने का अवसर मिलेगा कि पौधे केवल जैव विविधता का हिस्सा नहीं, बल्कि कृषि और स्वास्थ्य विज्ञान के लिए भी अत्यंत उपयोगी साधन हैं।'

निमाड़ के हरियर साक्षीः परंपरागत वृक्षों का संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा की मिसाल

- **डॉ. दीपक हरि रानडे**
- **डॉ. मनोज कुमार कुरील**
- **डॉ. स्मिता अग्रवाल**
  कृषि महाविद्यालय, खंडवा

'जिन पेड़न के नीचे बैठ के दादा पढ़े, आज उँई फिर से जिंदा होवत हे...'

निमाड़ की मिट्टी में कुछ खास है - इसमें माही, ताप्ती के संग बहती विरासत, लोक परंपराओं की गूंज और हरियाली से उपजा अपनापन बसता है। यहीं, खंडवा के बी. एम. कृषि महाविद्यालय में कुछ ऐसे वृक्षों को संजीवनी दी जा रही है, जिनके नीचे कभी गाँव के बुज़ुर्ग बीड़ी सुलगाते चर्चा करते, बच्चे लट्टू घुमाते और महिलाएं चूल्हे के लिए पत्ते बटोरती थीं। इन्हीं विलुप्तप्राय वृक्षों में से एक रोहिणी जैसे वृक्ष नए संदर्भों में पुनर्जीवित हो रहे हैं—शिक्षा के साधन बनकर, जलवायु संकट के खिलाफ ढाल बनकर और निमाड़ की आत्मा के प्रतीक बनकर।

रोहिणी वृक्षः वनस्पति धरोहर की पुनर्खोज

प्राकृतिक वनस्पतियों की विविधता भारत की सबसे बड़ी धरोहरों में से एक है। दुर्भाग्यवश, अनेक ऐसे मूल वृक्ष हैं जो अब आमदृष्टि से ओझल हो गए हैं—या तो तेजी से हो रहे वनों की कटाई के कारण, या आधुनिकता की अंधी दौड़ में उनके उपयोग को भुला दिए जाने से। ऐसे ही एक दुर्लभ एवं पारंपरिक वृक्ष का नाम है रोहिणी। कृषि महाविद्यालय, खंडवा ने इस वृक्ष को संरक्षित कर वनस्पति संरक्षण और पारंपरिक ज्ञान के पुनरुद्धार की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। निमाड़ी में कहावत है 'रोहणी जैसो जीम, सुख के थारा जावे नी' यानी मुसीबत में भी टस से मस ना हो।

यह वृक्ष भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों — विशेषकर राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात और पंजाब में पाया जाता है। यह श्रेणी बद्ध रूप से संकटग्रस्त (vulnerable) प्रजातियों में गिना जाता है।

रोहिणी एक मध्यम आकार का वृक्ष है जिसकी

ऊँचाई लगभग 6 से 10 मीटर तक हो सकती है। इसकी छाल मोटी व दरारदार होती है, और पत्ते एकवर्ती (simple) होते हैं। वसंत ऋतु में इसमें खूबसूरत नारंगी-लाल रंग के फूल आते हैं, जो इसकी शोभा को और बढ़ा देते हैं।

इस वृक्ष की लकड़ी हल्की, मजबूत और टिकाऊ होती है, जिस कारण अतीत में इसका प्रयोग फर्नीचर, यंत्र, रथ, और धार्मिक कलाकृतियों में होता था।

औषधीय और पारंपरिक महत्वः रोहिणी की छाल आयुर्वेद में रक्तविकार, पीलिया और चर्म रोगों के उपचार में उपयोग की जाती है, इसकी लकड़ी जीवाणुनाशक मानी जाती है, पारंपरिक ग्रामीण समाज में इसे वर्षा संकेतक वृक्ष माना जाता था — मान्यता थी कि इसके फूलों की अधिकता वर्षा के अच्छे संकेत देती है।

खंडवा और कृषि महाविद्यालय की भूमिका

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रानडे ने जानकारी दी कि खंडवा क्षेत्र, जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक देसी वृक्षों की जैव विविधता रही है, अब धीरे-धीरे शहरीकरण और भू-उपयोग परिवर्तन के कारण वनस्पति संकट में आ गया है। ऐसे में कृषि महाविद्यालय, खंडवा रोहिणी वृक्ष का रोपण और संरक्षण करने का प्रयास कर रहा है ।

क्या है अजोला खेती ?

● गरिमा सिंह ● पूनम शर्मा ● डॉ आकांक्षा शर्मा
● अनूप शुक्ला सहायक प्रोफेसर
(कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग)
एकेएस विश्वविद्यालय, सतना

अजोला की खेती में जलीय फर्न की एक अनोखी प्रजाति उगाना शामिल है, जिसे मच्छर, डकवीड, फेयरी मॉस और वॉटर फर्न जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। विशिष्ट फर्न के विपरीत, अजोला प्रजाति का एक विशेष और अत्यधिक छोटा रूप होता है, जो पारंपरिक फर्न के बजाय डकवीड या मॉस जैसा दिखता है। एक उल्लेखनीय प्रजाति, एजोला फ़िलिकुलोइड्स का एक प्रकाशित संदर्भ जीनोम भी है। दिलचस्प बात यह है कि इओसीन काल के दौरान, अजोला प्रचुर मात्रा में विकसित हुआ और महत्वपूर्ण कार्बन को अवशोषित किया। अजोला को आर्द्रभूमियों, मीठे पानी की झीलों और खाइयों में एक आक्रामक पौधा माना जा सकता है। इन पारिस्थितिक तंत्रों में इसकी उपस्थिति जैव विविधता और जलीय वातावरण की समग्र कार्यप्रणाली को काफी हद तक बदल सकती है।

तालाबों में अजोला उगाने पर चरण- दर-चरण मार्गदर्शिका

● कटाई के लिए अजोला की वांछित मात्रा के आधार पर तालाब का आकार निर्धारित करें। लगभग 2 मीटर लंबाई और 1 मीटर चौड़ाई वाला तालाब छोटे पैमाने पर खेती के लिए उपयुक्त है। तालाब की संरचना बनाने के लिए ज़मीन को समतल करें और ईंटें बिछाएँ।

● अवरोध प्रदान करने के लिए तालाब के तल पर पुरानी प्लास्टिक की बोरियाँ या चादरें रखें।

● पूरे तालाब को 150 गेज मोटाई की टिकाऊ प्लास्टिक शीट से ढक दें।

● प्लास्टिक शीटों को अपनी जगह पर बनाए रखने के लिए साइड की दीवारों पर ईंटें लगाकर उनके किनारों को सुरक्षित करें।

● लगभग 25 किलो क्लीया फैलाएं तालाब पर समान रूप से।

● 5 किलो गोबर और 30 ग्राम राजफॉस या मसूरी फॉस का मिश्रण मिट्टी पर समान रूप से लगाएं।

● तालाब में पानी की गहराई लगभग 10 सेमी बनाए रखें।

● गणना करें कि प्रति वर्ग मीटर तालाब में 500 ग्राम अजोला कल्चर की आवश्यकता होती है।

● 1-2 सप्ताह के भीतर, अजोला तालाब को पूरी तरह से ढक देगा, जो दर्शाता है कि यह कटाई के लिए तैयार है।

पशुधन चारे के रूप में अजोला की खेती के लिए सर्वोत्तम अभ्यास

भारत में प्राकृतिक संसाधन विकास परियोजना (एनएआरडीईपी) ने एक ऐसी खेती तकनीक विकसित की है जो पशुपालकों के लिए सरल और किफायती है। यह नाडेप विधि का सारांश दिया गया है-

● **जल निकाय बनाना** : सिलपॉलिन शीट को पेड़ की जड़ों से बचाने के लिए 2 × 2 × 0.2 मीटर का गड्ढा खोदें और इसे प्लास्टिक की बोरियों से ढक दें। चादर पर 10-15 किलोग्राम छनी हुई उपजाऊ मिट्टी समान रूप से फैलाएं।

● **घोल लगाना** : 2 किलो गोबर, 30 ग्राम सुपर फॉस्फेट और 10 लीटर पानी से बना घोल शीट पर डालें। स्तर को लगभग 10 सेमी तक बढ़ाने के लिए अधिक पानी डालें।

अजोला का परिचय- प्लेस ओ और शुद्ध अजोला कल्चर तेजी से बढ़ता है और गड्ढे को भर देता है जिससे प्रतिदिन 50 की फसल प्राप्त होती है। 0.5-1 किलोग्राम ताजा और शुद्ध अजोला कल्चर को पानी में डालें। यह तेजी से बढ़ेगा और 10-15 दिनों के भीतर गड्ढे को भर देगा, जिससे प्रतिदिन 500-600 ग्राम की फसल प्राप्त हो सकेगी।

पोषक तत्व प्रबंधन- 20 का मिश्रण डालें। अजोला गुणन को बढ़ावा देने के लिए हर पांच दिन में जी सुपर फॉस्फेट और 1 किलो गाय का गोबर, सूक्ष्म पोषक तत्व मिश्रण का साप्ताहिक जोड़ खनिज सामग्री को बढ़ा सकता है।

● भीड़भाड़ को रोकने के लिए अतिरिक्त बायोमास को नियमित रूप से हटाना।

● यदि आवश्यक हो तो छाया के साथ तापमान 25 डिग्री सेल्सियस से नीचे बनाए रखें।

● 5.5 और 7 के बीच पीएच का परीक्षण करना और उसे बनाए रखें।

● बिस्तर की मिट्टी और पानी को समय- समय पर बदलें।

● नाइट्रोजन निर्माण को रोकें, हर छह माह में बिस्तर की सफाई करें।

● अजोला को ताजे पानी में धोएं।

अजोला उत्पादन बढ़ाने के लिए युक्तियाँ और तकनीकें

पोषक तत्व अनुपूरण- अजोला वृद्धि के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए हर दो सप्ताह में एक बार 1 किलो गाय का गोबर और 10-20 ग्राम राजफोस (रॉक फॉस्फेट) डालें।

जल प्रतिस्थापन- तालाब से एक- चौथाई पानी निकालें और इसे हर दो सप्ताह में एक बार नए ताजे पानी से भरें। यह पानी की गुणवत्ता बनाए रखने और अतिरिक्त पोषक तत्वों के निर्माण को रोकने में मदद करता है।

मृदा नवीनीकरण- मौजूदा मिट्टी को हटा दें तालाब में समय- समय पर 5 किलो ताजी मिट्टी डालें। यह अजोला के विकास के लिए पोषक तत्वों से भरपूर वातावरण सुनिश्चित करता है।

तालाब की सफाई और दोबारा शुरू करना- हर छह महीने में तालाब को खाली करें और नई संस्कृति और मिट्टी के साथ अजोला की खेती फिर से शुरू करें। यह किसी भी संदूषण या कीट/ बीमारी के संचय को रोकने में मदद करता है।

अजोला की खेती के लिए इष्टतम स्थितियाँ- तापमान, प्रकाश और पीएच

जल अम्लता (पीएच)

● अजोला 3.5 से 10 पीएच रेंज के भीतर जीवित रह सकता है।

● यह 3.5 से कम पीएच वाली अत्यधिक अम्लीय मिट्टी में नहीं उग सकता है।

● IRRI2 माध्यम के लिए पसंदीदा पीएच रेंज 5.5 और 6.5 के बीच है।

तापमान

● अजोला तापमान की एक विस्तृत श्रृंखला के प्रति सहनशीलता प्रदर्शित करता है।

● कुछ अजोला प्रजातियाँ -5°C तक के तापमान में भी जीवित रह सकती हैं।

● आमतौर पर 35°C से ऊपर वृद्धि कम हो जाती है, और 45°C से अधिक तापमान के लंबे समय तक संपर्क में रहने से बचा नहीं जा सकता है।

● अधिकांश प्रजातियाँ 18°C और 28°C के बीच तापमान में पनपती हैं, लेकिन कुछ प्रजातियाँ जैसे- पिन्नाटा, मेक्सिकाना और कैरोलिनियाना 30°C तक का तापमान सहन कर सकती हैं।

रोशनी

● अजोला और उसके सहजीवी भागीदार अनाबेना में प्रकाश संश्लेषण और नाइट्रोजन् गतिविधि विनियमन में प्रकाश महत्वपूर्ण है।

● वसंत के दौरान उच्च अक्षांशों को छोड़कर, अजोला प्रजातियाँ पूर्ण सूर्य के प्रकाश को कम पसंद करती हैं।

अजोला खेती की व्यावसायिक क्षमता : बाजार विश्लेषण और अवसर

बढ़ती मांग : बढ़ती मांग जैविक एवं टिकाऊ कृषि के लिए प्रथाओं ने एक अनुकूल बाजार तैयार किया है। इसके प्राकृतिक उर्वरक गुण और वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करने की क्षमता इसे एक बनाती हैकिसानों के लिए आकर्षक विकल्प।

पशुधन आहार: अजोला प्रोटीन से भरपूर होता है, विटामिन और खनिज, इसे पशुओं के लिए एक पौष्टिक आहार बनाते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले पशु आहार की बढ़ती मांग अजोला की खेती के लिए एक आकर्षक बाजार अवसर प्रस्तुत करती है।

जैव उर्वरक उत्पादन : अजोला की नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने की क्षमता इसे एक उत्कृष्ट जैव उर्वरक बनाती है। जैविक उर्वरकों की मांग बढ़ रही है, जिससे अजोला- आधारित जैव उर्वरकों के लिए संभावित बाजार उपलब्ध हो रहा है।

अपशिष्ट जल उपचार: पोषक तत्वों और प्रदूषकों को अवशोषित करने की क्षमता के कारण अजोला अपशिष्ट जल उपचार में प्रभावी है। इससे अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों और पर्यावरण-अनुकूल जल प्रबंधन प्रणालियों में अजोला की खेती के अवसर खुलते हैं।

टिकाऊ कृषि : मिट्टी की उर्वरता में सुधार करने और सिंथेटिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने की अपनी क्षमता के साथ, एजोला टिकाऊ कृषि सिद्धांतों के अनुरूप है। यह इसे पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों के बढ़ते बाजार में अच्छी स्थिति में रखता है।

लघु- स्तरीय प्रणालियों में अजोला विकास को बढ़ावा देना: घरेलू बागवानों के लिए युक्तियाँ

पर्याप्त धूप प्रदान करें: अजोला पूर्ण सूर्य के प्रकाश में पनपता है, इसलिए सुनिश्चित करें कि इसे प्रत्येक दिन कम से कम 4-6 घंटे सीधी धूप मिले।

पानी का तापमान बनाए रखें: अजोला 20-30°C (68- 86°F) के बीच पानी का तापमान पसंद करता है। पानी को गर्म रखें, खासकर ठंड के महीनों में।

पानी के पीएच को नियंत्रित करें: एजोला 6.5-7.5 के बीच थोड़ा अम्लीय से लेकर तटस्थ पीएच स्तर को प्राथमिकता देता है। नियमित रूप से पानी का परीक्षण करें और यदि आवश्यक हो तो समायोजन करें।

पोषक तत्वों की पूर्ति : अजोला को अतिरिक्त पोषक तत्वों से लाभ होता है। इसकी वृद्धि को बढ़ाने के लिए जैविक खाद या कम्पोस्ट चाय मिलाने पर विचार करें।

नियमित कटाई : भीड़भाड़ को रोकने और नई वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए नियमित रूप से अजोला की कटाई करें।

जल निकाय में अजोला वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए जैविक तरीके

पोषक तत्वों से भरपूर पानी- अजोला के विकास को समर्थन देने के लिए उच्च पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रोजन और फास्फोरस के साथ पानी बनाए रखें।

वर्मीकम्पोस्ट अनुप्रयोग- मिट्टी की उर्वरता और पोषक तत्वों को बढ़ाने के लिए वर्मीकम्पोस्ट लागू करें, जिससे अप्रत्यक्ष रूप से अजोला की वृद्धि को लाभ होता है।

जैविक उर्वरक- जल निकाय को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए गाय के गोबर या मुर्गी खाद जैसे जैविक उर्वरकों का उपयोग करें।

हरी खाद वाली फसलें- जलस्रोत के आसपास फलियां जैसे नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाले पौधे उगाएं। पानी में शामिल होने पर, वे नाइट्रोजन छोड़ते हैं, जिससे अजोला के विकास में सहायता मिलती है।

कम्पोस्ट चाय- पोषक तत्वों और पीआर विकास के साथ कंपो पानी से बने कंपो उर्वरक को लागू करें।

मल्चिंग- पोषक तत्वों की हानि को रोकने और नमी बनाए रखने के लिए जल निकाय के चारों ओर सूखे पत्तों या पुआल जैसी जैविक गीली घास सामग्री का उपयोग करें।

रासायनिक प्रदूषकों से बचें- रासायनिक उर्वरकों, शाकनाशियों और कीटनाशकों को कम करें या समाप्त करें, क्योंकि वे अजोला के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

प्रदेश के 6.69 लाख धान किसानों को दीपावली से पहले 337 करोड़ बोनस का तोहफा दिया

किसानों को नहीं होगी कोई परेशानी: मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

बालाघाट (कृषक जगत)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश के 6 लाख 69 हजार 272 धान किसानों को दीपावली से पहले बड़ी सौगात दी है। उन्होंने एक क्लिक के जरिए किसानों के बैंक खातों में कुल 337 करोड़ 12 लाख रुपए की प्रोत्साहन (बोनस) राशि ट्रांसफर की। यह राशि उन किसानों को दी गई है, जिन्होंने समर्थन मूल्य पर धान की बिक्री की थी। डॉ. यादव ने पहले ही घोषणा की थी कि धान बेचने वाले किसानों को प्रति हेक्टेयर 4 हजार रुपए, अधिकतम 10 हजार रुपए का बोनस दिया जाएगा।

बालाघाट किसान सम्मेलन

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह सम्मेलन केवल किसानों के लिए नहीं, बल्कि युवाओं के लिए भी नई संभावनाओं का द्वार खोलता है। उन्होंने कहा, 'किसान और युवा, दोनों प्रदेश के विकास के स्तंभ हैं। किसानों की मेहनत और युवाओं की ऊर्जा से ही हम प्रदेश को आगे ले जाएंगे।' उन्होंने भरोसा दिलाया कि किसानों को कोई परेशानी नहीं होने दी जाएगी। उन्होंने यह भी ऐलान किया कि गेहूं और सोयाबीन पर भी बोनस राशि दी जाएगी। इस मौके पर उन्हें बालाघाट जिले के प्रसिद्ध चिन्नौर चावल (जीआई टैग प्राप्त) और जैविक गुड़ भेंट किया गया।

धान का कटोरा है बालाघाट

मुख्यमंत्री कृषि उन्नति योजना के तहत धान प्रोत्साहन (बोनस) राशि वितरण कार्यक्रम में इस मौके पर उद्यानिकी, पशुपालन एवं मत्स्योत्पादन विभाग सहित ग्रामीण आजीविका विकास मिशन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की गई भव्य प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। बालाघाट जिले को मध्यप्रदेश का 'धान का कटोरा' कहा जाता है, क्योंकि यहां 1.5 लाख हेक्टेयर से भी अधिक रकबे में धान की खेती होती है और हर सीजन में समर्थन मूल्य पर करीब 5 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान यहां से खरीदी जाती है। इस संयुक्त प्रदर्शनी में उन्नत कृषि यंत्र जैसे - ड्रोन, सुपर सीडर, हैप्पी सीडर, रीपर, बेलर एवं लेजर लैंड लेवलर का प्रदर्शन किया गया। साथ ही नैनो यूरिया और नैनो डीएपी जैसी नई तकनीक, प्राकृतिक खेती, श्रीअन्न (मिलेट्स) आधारित उत्पाद, मत्स्य पालन के नवाचार और बालाघाट जिले में डेयरी विकास की संभावनाएं भी रोचक तरीके से प्रदर्शित की गईं। प्रदर्शनी में ग्रामीण आजीविका विकास मिशन से जुड़े महिला स्व-सहायता समूहों के उत्पादों का भी प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर प्रभारी मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री श्रीमती संपतिया उइके, कटंगी विधायक श्री गौरव सिंह पारधी सहित अन्य जनप्रतितिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने चलाया पेडी ट्रांसप्लांटर

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विभागों द्वारा लगाई गई विकास प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने कृषि नवाचार को बढ़ावा देने वाले पेडी ट्रांसप्लांटर की खूबियों को जाना और उसे चलाकर भी देखा। प्रदर्शनी में स्व-सहायता समूह की लखपति बहनों ने तुअर दाल बनाने की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया, जिसे देखकर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने समूह की महिलाओं द्वारा किये गये कार्य की सराहना की और उन्हें प्रोत्साहित किया।

नई घोषणा : सोलर फेंसिंग

मुख्यमंत्री ने किसानों की बड़ी समस्या का समाधान करते हुए घोषणा की कि पेंच नेशनल पार्क के आसपास के खेतों की फसल को जंगली जानवरों से बचाने के लिए सोलर फेंसिंग कराई जाएगी। साथ ही, राजीव सागर सिंचाई परियोजना से नहलेसरा बांध को जोड़ने के लिए परीक्षण कर कार्ययोजना बनाई जाएगी।

मेले में कृषक जगत का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री

बालाघाट किसान मेले की चित्रमय झलकियां

प्रदेश के पूर्व कृषि मंत्री श्री गौरीशंकर बिसेन कृषक जगत के साथ।

बालाघाट-सिवनी सांसद श्रीमती भारती पारधी।

स्टॉल पर चर्चा करते हुए कृषि सचिव श्री निशांत बरवड़े। साथ हैं बालाघाट उप संचालक श्री फूल सिंह मालवीय।

बालाघाट कलेक्टर श्री मृणाल मीना को कृषक जगत भेंट करते हुए प्रकाश दुबे।

संचालक कृषि श्री अजय गुप्ता को स्टॉलों के संबंध में जानकारी देते हुए बालाघाट के उपसंचालक कृषि।

संचालक कृषि के साथ जबलपुर संभागायुक्त श्री धनंजय सिंह भदौरिया।

बालाघाट मेले में कृषक जगत का अवलोकन कर चर्चा करते हुए संचालक कृषि श्री अजय गुप्ता। इस अवसर पर संयुक्त संचालक श्री के. एस. नेताम, बालाघाट उपसंचालक श्री फूलसिंह मालवीय, छिंदवाड़ा उपसंचालक श्री जितेन्द्र सिंह, सिवनी उपसंचालक श्री एस.के. धुर्वे एवं कृषि यंत्री संचालनालय भोपाल श्री एम.डी. डैनी उपस्थित थे।

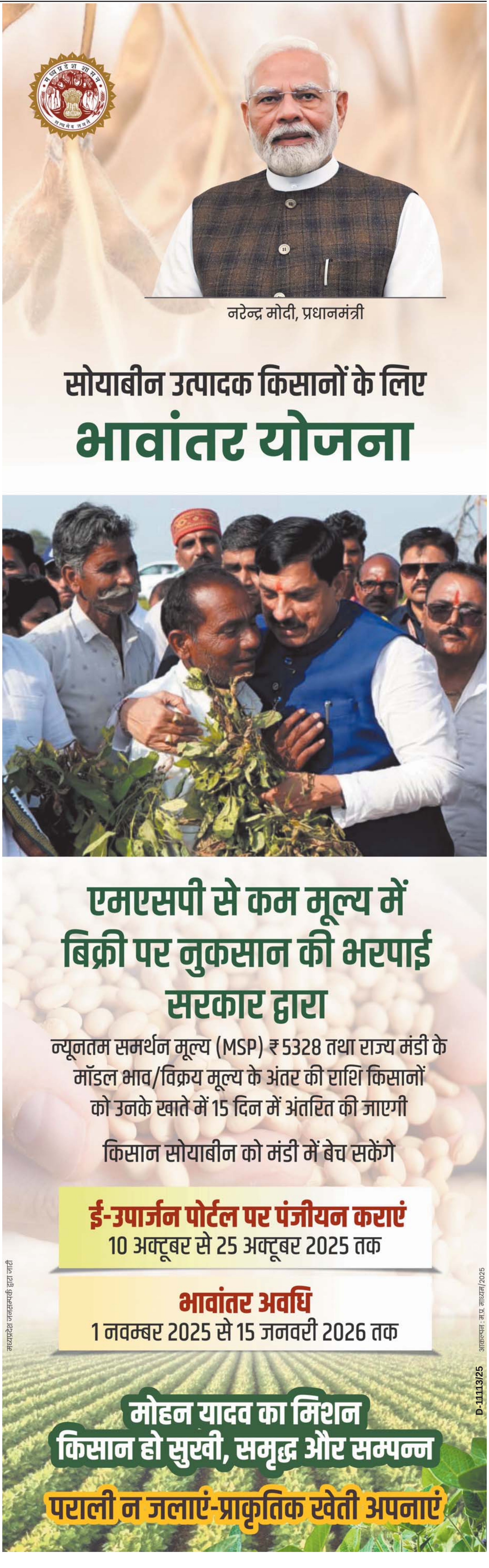

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

देश में मान्य 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स की सूची

देश एवं प्रदेश में नकली उर्वरक, बीज, कीटनाशक और बायोस्टिमुलेंट्स की समस्याओं एवं शिकायतों को मद्देनजर रखते हुए केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि केवल 146 अधिसूचित बायोस्टिमुलेंट्स ही भारत में मान्य है। सूची इस प्रकार है-

Biostimiulant

1. Humic Acid 5 % (Powder)
2. Potassium Humate 49% (Powder)
3. Humates and Fulvates 22% (Liquid)
4. Humates (12.5%) (Liquid)
5. Humic Acid 51 % (Granular)
6. Ascophyllum nodosum 15% (Liquid)
7. Sargassum tenerrimum 2% (Granular)
8. Kappaphycus alvarezii 24% (Liquid)
9. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)
10. Adhatoda vassica (Powder)
11. Mixture of Humic Acid, Amino Acid, Vitamins and Bio-chemicals (powder)
12. Humic Acid 6% (Liquid)
13. Humic acid 1.5% (Granules)
14. Humic and Fulvic acid 25.05% (Liquid)
15. Humic and Fulvic acid 76% (Powder)
16. Ascophyllum nodosum 7% (Liquid)
17. Kappaphycus alvarezii 7.2% (Liquid)
18. Kappaphycus alvarezii 9.5% (Liquid)
19. Kappaphycus alvarezii and Sargassum swartzii in ratio of 1:1 (Liquid)
20. Spirulina 10% (Liquid)
21. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)
22. Mixture of seaweed extract and algal extract (Liquid)
23. Mixture of Seaweed extract; Humic and Fulvic acid, Amino acids and Vitamins (Liquid)
24. Mixture of Antioxidant and Vitamins (Powder)
25. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Liquid)
26. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
27. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Granules)
28. Mixture of Botanical extract and Seaweed extract (Liquid)
29. Protein hydrolysate 62.1% (Animal Source) (Liquid)
30. Protein Hydrolysates 36.04% (Animal Source) (Liquid)
31. Protein Hydrolysates 25% (Plant Source) (Liquid)
32. Vinasse residue (Glutamic acid 18%)(Liquid)
33. Protein hydrolysate 16.9% (Plant Source) (Liquid)
34. Bacterial biomass hydrolysate (Amino acids 2%) (Liquid)
35. Protein hydrolysate 1.5 % (Plant Source) (Granules)
36. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal Source) (Liquid)
37. Protein hydrolysate (Amino acids 10 %) (Plant. Source) (Liquid)
38. Protein hydrolysate (Amino acids 5 %) (Plant Source) (Powder)
39. Protein hydrolysate (Amino acids 20 %) (Plant Source) (Liquid)
40. Protein hydrolysate 27% (Plant Source) (Powder)
41. Lipo-chitooligosaccharides from Escherichia coli (Liquid)
42. Lipase from Saccharomyces cerevisiae (Powder)
43. Microbial cell (Methylococcus capsulatus): 1 x 10^9 cfu/g (Powder)
44. Microbial Consortium 1 x 10^7 cfu/ g
45. 2- Bromo- (l H)- Indole- 3 Carboxaldehyde 1ppm (Liquid)
46. Humic and Fulvic acid (29%) (Liquid)
47. Humate 7.15 % (Liquid)
48. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22% (Liquid)
49. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 99.52 % (Liquid)
50. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 97.52% (Liquid)
51. Mixture of Protein Hydrolysate and Antioxidant (Liquid)
52. Mixture of Protein hydrolysate, seaweed extract and humic acid (Liquid)
53. Protein hydrolysate 62.5 % (Animal source) (Liquid)
54. Protein hydrolysate (Bacterial biomass) 100 % (Powder)
55. L-Pyroglutamic acid (Pidolic acid) 10 % (Liquid)
56. Antioxidant (Glycyrrhizic acid) 1 % (Powder)
57. Humic acid 50% (Powder)
58. Humic acid and Fulvic acid 45.1% (Crystal)
59. Humic acid- 7.1% (Granule)
60. Humic acid 19.6 % (Liquid)
61. Seaweed (Sargassum wightii) extract 35 % (Powder)
62. Seaweed (Sargassum wightii) extract 5 % (Granuler)
63. Seaweed (Sargassum wightii) extract 10 % (Liquid)
64. Seaweed (Sargassum wightii) extract 4 % (Granules)
65. Seaweed (Kappaphycus alvarezii) extract- 17% (Liquid)
66. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 18.4% (Liquid)
67. Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract 22% (Liquid)
68. Mixture of humic substances and seaweed extract (Liquid)
69. Mixture of seaweed extract and vitamin (Liquid)
70. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (Granule)
71. Mixture of Seaweed extract, Potassium Humate and Protein Hydrolysates (Liquid)
72. Mixture of Seaweed extract and Humic acid (Granule)
73. Mixture of Seaweed extract, Humic acid and Fulvic acid (Granules)
74. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
75. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (Powder)
76. Mixture of Protein hydrolysate and Humic acid (liquid)
77. Mixture of Seaweed (Ascophyllum nodosum) extract, Protein hydrolysate and botanical extract (Liquid)
78. Protein hydrolysate 15% (Animal source) (Liquid)
79. Protein Hydrolysate (Plant Source) 25 % (Powder)
80. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (Liquid)
81. Protein hydrolysate 2% (Plant source) (Granule)
82. Protein Hydrolysate 27.5 % (Animal source) (Liquid)
83. Protein hydrolysate (Plant Source) (Liquid)
84. Protein hydrolysate 20% (Liquid)
85. Cell free extract of Pseudomonas putida (Liquid)
86. Phenolic compound (3 %) (Liquid)*
87. S- Abscisic acid (8.3%) (Granule)
88. Humalite 100% (Granular powder)
89. Humic acid and Fulvic acid 19.5 % (Liquid)
90. Humalite 82% (Powder)
91. Humic acid and Fulvic acid 85% (Powder)
92. Humic substance 16% (Liquid)
93. Humic substances 6% (Liquid)
94. Humic acid 0.27% (Liquid)
95. Humic acid 1 % (Liquid)
96. Humic substances 1.5% (Granule)
97. Humic substances 6% (Liquid)
98. Humic acids 40% (Powder)
99. Humic acid- 1.2 % (granules)
100. Humic acid 4% (Liquid)
101. Sargassum tenerrimum 1.2% (Granules)
102. Sargassum tenerrimum 10% (Liquid)
103. Ascophyllum nodosum 90% (Flakes)
104. Ascophyllum nodosum 5% (Powder)
105. Kappaphycus alvarezii 4.4% (liquid)
106. Kappaphycus alvarezii 19.5% (liquid)
107. Ascophyllum nodosum 20% (liquid)
108. Ascophyllum nodosum 22% (liquid)
109. Durvillaea potatorum 7.5% (liquid)
110. Carrabiitol (Kappaphycus alvarezii) 80% (Powder)
111. Ascophyllum nodosum 98% (liquid)
112. Sargassum tenerrimum 10% (II) (liquid)
113. Adhatoda vasica extract 2% (Liquid)
114. Brassica juncea seed extract– 0.2% (Liquid)
115. Cytokinin (Zea mays kernel) 0.2% (Liquid)
116. Basil oil (Eugenol) 2% (Liquid)
117. Mixture of Seaweed and blue green algal extract (Liquid)
118. Mixture of Protein Hydrolysate and Seaweed extract (Liquid)
119. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
120. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Liquid)
121. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Powder)
122. Mixture of Seaweed extract, Protein Hydrolysate and Humic acid (Granule)
123. Mixture of Humic acid and Seaweed extract (powder)
124. Mixture of Humic acid and Protein hydrolysate (Liquid)
125. Glutamic acid 5% (Powder)
126. Protein hydrolysate 46.9% (Animal source) (Liquid)
127. Protein Hydrolysate 29.34% (Animal source) (Liquid)
128. Protein Hydrolysate 12% (Animal source) (Liquid)
129. Protein Hydrolysate 68.33% (Animal source) (Liquid)
130. Protein hydrolysate 16% (Animal source) (Liquid)
131. Glycine 5% (Powder)
132. Protein hydrolysate 18% (Animal source) (Liquid)
133. Protein hydrolysate 54% (Animal source) (Liquid)
134. Protein hydrolysate 20% (Plant source) (liquid)
135. Proline 1% (Liquid)
136. Amino acids (microbial source) 14% (Liquid)
137. Amino acids (microbial source) 40% (Powder)
138. γ-Polyglutamic acid from Bacillus subtilis (Liquid)
139. Protease and Cellulase enzyme from Bacillus sp. (Liquid)
140. Harpin $\alpha\beta$ from Escherichia coli (Granule)
141. Non Saccharomyces yeast (Wickerhamomyces anomalus) 20 % (Powder)
142. Homobrassinolide- 0.04% (Liquid)
143. Homobrassinolide- 0.03% (liquid)
144. Vitamin B3 (Nicotinamide) 3.25% (liquid)
145. Vitamin (Alpha Tocopherol) 1% (Liquid)
146. Phenolic compounds 3% (Liquid)*

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार

कृषक जगत

समस्या– अलग-अलग मौसम में उगाई जाने वाली गोभी की विभिन्न प्रजातियों के बारे में जानकारी दें।

समाधान– गोभी की बढ़वार और फूल के बनने एवं विकास के लिए वांछित तापमान पर आधारित फूल गोभी की किस्मों के विकास से अब लगभग पूरे वर्ष फूलगोभी उगाना संभव हो गया है। वर्ष के विभिन्न मौसम के लिए फूलगोभी की उन्नत प्रजातियां व संकर किस्में निम्न: परिपक्वता वर्ग किस्में व संकर बुआई का समय उपलब्धता का समय उपज (क्वि./हे.) अगेती 1 पूसा मेघना -100 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा कार्तिक संकर -110 क्विंटल

प्रति हेक्टेयर, पूसा कार्तिकी -120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा अश्विनि -120 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मई के अंत व जून के पहले पखवाड़े में सितम्बर के अंत से अक्टूबर तक; मध्य अगेती पूसा शरद -250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा हाईब्रिड-2 - 310 क्विंटल प्रति हेक्टेयर। जुलाई का अंतिम सप्ताह-अगस्त नवम्बर-दिसम्बर मध्य पिछेती पूसा पौषजा-325 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा शक्ति -320 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, अगस्त के अंत से सितम्बर तक दिसम्बर-जनवरी पिछेती या स्नोबाल पूसा स्नोबाल के-1- 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा स्नोबाल के-25 -320 क्विंटल प्रति हेक्टेयर, पूसा स्नोबाल फूलगोभी हाईब्रिड-1 सितम्बर-नवम्बर जनवरी-मार्च -350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या– सामान्यत: गाजर की बुवाई सितम्बर- अक्टूबर में की जाती है, बेमौसम लगाई जाने वाली किस्में बताएं।

समाधान– संस्थान द्वारा विकसित गाजर

की उन्नत प्रजातियों से वर्ष भर पैदावार ली जा सकती हैं जिससे गाजर की उपलब्धता मई-जून से लेकर नवम्बर से जनवरी तक सुनिश्चित किया जा सकता हैं। वर्ष के विभिन्न मौसमों के लिए गाजर की उन्नत प्रजातियां व संकर किस्में किस्में बुआई का समय उपलब्धि काल उपज (क्वि./हे.) पूसा वृष्टि जुलाई-अक्टूबर अक्टूबर-नवम्बर -180-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा रुधिरा, पूसा असिता, पूसा कुल्फी, पूसा वसूदा (संकर) सितम्बर-अक्टूबर नवम्बर-जनवरी -300-450 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा यमदाग्नि, पूसा नयनज्योति (संकर) सितम्बर-मार्च नवम्बर-अप्रैल -270-370 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा वृष्टि मार्च-अप्रैल मई-जून - 150-160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या– साल भर मूली लगाना क्या संभव है? उपयुक्त किस्में बताएं।

समाधान – विभिन्न मौसम में उगाई जाने वाली मूली की उन्नत किस्में किस्म बुआई का समय फसल तैयार होने का समय उपज (क्वि./हे.) पूसा देसी अगस्त के मध्य से अक्टूबर मध्य तक मध्य सितम्बर से मध्य

दिसम्बर तक -175 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा मृदुला सितम्बर के प्रथम पखवाड़े से मध्य नवम्बर तक अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से जनवरी के पहले पखवाड़े तक -180 क्विंटल प्रति हेक्टेयर जेपनीज व्हाइट, पूसा स्वेता, पूसा जामुनी, पूसा गुलाबी दिसम्बर के दूसरे पखवाड़े से फरवरी तक मध्य फरवरी से अप्रैल के तीसरे सप्ताह तक -250 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा चेतकी अप्रैल के पहले सप्ताह से मध्य अगस्त तक मई के पहले पखवाड़े से सितम्बर के दूसरे पखवाड़े तक - 170 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या– कद्दूवर्गीय फसलों की नवीन प्रजातियों की जानकारी दें।

समाधान– फसल किस्म उत्पादन (क्वि./हे.) लौकी पूसा समृद्धि -325 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा नवीन -325 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा संतुष्टी -300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; करेला पूसा विशेष -200 क्विंटल

प्रति हेक्टेयर; पूसा दोमौसमी -225 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; पूसा औषधी -200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर खीरा पूसा उदय -160 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पूसा बरखा -150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तोरई (चिकनी) पूसा स्नेहा -150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; तोरई (धारीदार) पूसा नूतन -150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पेठा पूसा उजवल, पूसा सब्जी पेठा -350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; खरबूजा पूसा मधुरस -200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; तरबूजा शुगर बेबी -300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर चप्पन कद्दू पूसा पसन्द -165 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

समस्या– पत्ता गोभी और पेठे की किस्में बताएं।

समाधान– पूसा संस्थान से अनुमोदित पत्ता गोभी और पेठे की संकर किस्म हैं- पत्ता गोभी पूसा कैबेज संकर-1 320 क्विंटल प्रति हेक्टेयर; पेठा पूसा उर्मी - 475 क्विंटल प्रति

हेक्टेयर; पूसा श्रेयाली -520 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

स्त्रोत : भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

**कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864**

कृषक जगत
बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक रु. 95 | सब्जियों में पौध संरक्षण रु. 75 | मशरूम एक लाभ अनेक रु. 45 | मिर्च की उन्नत खेती रु. 55 | केला उत्पादन रु. 70 | गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण रु. 75

कोड : 016 | कोड : 017 | कोड : 019 | कोड : 020 | कोड : 025 | कोड : 027

पपीता रु. 55 | अदरक रु. 55 | फलों की खेती रु. 75 | सजाएं फूलों से बगिया रु. 65 | घर की बगिया रु. 95

कोड : 031 | कोड : 032 | कोड : 040 | कोड : 041 | कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 017 019 020 025 027 031 032 034 040 041 050

नाम
ग्राम पोस्ट तह.
जिला फोन/मोबा.
कुल राशि ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या
संलग्न ड्राफ्ट नं. मनी आर्डर रसीद क्र. वी.पी. भेजें

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल - 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

पौष्टिकता से भरपूर खजूर

खजूर अपने आप में एक टॉनिक भी है। खजूर के साथ उबला हुआ दूध पीने से ताकत मिलती है। खजूर को रात भर पानी में भिगो कर रखिये। फिर इसी में थोड़ा मसल कर उसका बीज निकाल दीजिए। यह हफ्ते में कम से कम दो बार सुबह लेने से अपने दिल को मजबूती मिलती है। यदि कब्ज की शिकायत है तो रात भर भिगाया हुआ खजूर सुबह महीन पीस कर लेने से यह शिकायत दूर हो सकती है।

पेड़ भी उपयोगी

खजूर के पेड़ का हर हिस्सा उपयोगी होता है। इसकी पत्तियाँ और तना घर के लिए लकड़ी बाड़ और कपड़े बनाने के काम आते हैं। पत्तियों से रस्सी, सूत और धागे बनाए जाते हैं जिनके प्रयोग से सुंदर टोकरियों और फर्नीचरों का निर्माण होता है। फल की डंडियों और पत्तियों के मूल हिस्से इंधन के काम आते हैं। खजूर से अनेक खाद्य पदार्थों का निर्माण होता है जिनमें सिरका, तरह-तरह की मीठी चटनियाँ और अचार प्रमुख हैं। अनेक प्रकार के बेकरी उत्पादों के लिए इसके गूदे का प्रयोग होता है। अरबी व्यंजन कानुआ और भुने हुए खजूर के बीज सारे अरबी समाज में लोकप्रिय हैं। यहाँ तक कि इसकी कोपलों को शाकाहारी सलाद में अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक समझा जाता है। इससे निकलने वाले खजूरी रस और उससे तैयार किए हुए मद्य तथा गुड़ का प्रचुर उपयोग होता है।

गुण

खजूर के फल बहुत पौष्टिक व शक्तिवर्धक होते

हैं। फलों के गूदे में लगभग 20 प्रतिशत नमी, 60.65 प्रतिशत शर्करा, 2.5 प्रतिशत रेशा, 2.5 प्रतिशत प्रोटीन, 2 प्रतिशत से कम वसा व खनिज तत्व तथा विटामीन एए विटामीन बी.1 (थायमीन), विटामीन सी, नियासिन तथा विटामीन बी.2 (राईबोफलेबिन) पाए जाते हैं। एक किलोग्राम खजूर के फलों से 3100 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। खजूर के फलों को खाने से रक्तवर्धक तथा कब्ज दूर करने मे सहायक होते है इसमे औषधीय गुण भी पाये जाते है। शीतकाल में खजूर सबसे अधिक लोकप्रिय मेवा माना जाता है। खजूर रेगिस्तानी सूखे प्रदेश का फल है। प्रकृति की यह अनुपम देन खास ऐसे प्रदेशों के लिए ही है, जहां जिन्दगी बड़ी कठिन होती है और जहां बरसात या पीने के पानी की कमी होती है। इसके पेड़ हमें जीवन से लड़ना सिखाते हैं, इसीलिए इसके खाने का प्रचलन ज्यादातर सूखे रेगिस्तानी इलाकों में ही होता है। सूखे खजूर को छुहारा या खारकी कहते हैं। पिंड खजूर भी इसका दूसरा नाम है। श्वांस की बीमारी में इसका शहद अत्यन्त लाभप्रद होता है। इससे पाचन शक्ति बढ़ती है तथा यह ठंडे या शीत गुणधर्म वाला फल माना जाता है।

कितना खाएं

विशेषज्ञों के अनुसार 100 ग्राम से अधिक खजूर नहीं खाने चाहिए। इससे पाचन शक्ति खराब होने का भय रहता है। अगर कोई बहुत ही दुबला पतला हो, तो खजूर खाकर दूध पीने से उसका वजन भी बढ़ जाता है। यद्यपि खजूर हर प्रकार से गुणकारक है, परन्तु इसमें विरोधाभास भी पाया जाता है। शीतकाल में जो इसे खाते हैं, वे इसे गरम मानते हैं। आयुर्वेद ग्रंथों में इसे शीतल गुण वाला माना है, इसलिए गरम तासीर वालों को यह खूब उपयोगी व माफिक आता है। ठंडा आहार जिनके शरीर के अनुरूप नहीं होता, उन्हें खजूर नहीं खाना चाहिए। खजूर एक तरह से अमृत के समान है। यह आंखों की ज्योति व याददाश्त भी बढ़ाता है। दांतों से लहू निकले या मसूड़े खराब हों, तो यह दवा का काम करता है। इसके खाने से बाल कम झड़ते हैं। खजूर व उसका शहद एक तरह से कुदरत की अनुपम देन हैं, इसलिए खूब खाएं व खूब खिलाएं।

खजूर विश्व के सबसे पौष्टिक फलों में से एक है। सदियों से यह मध्यपूर्व एशिया और उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तानी इलाकों का प्रमुख भोजन बना हुआ है क्योंकि वहाँ इसके सिवा और कुछ उत्पन्न नहीं होता। यह ताज़ा और सूखा, दोनों तरह के फलों में गिना जा सकता है। पेड़ पर पके खजूर ज्यादा स्वादिष्ट होते हैं। लेकिन जल्दी खराब हो जाने की वजह से इसे धूप में सुखाया जाता है। ताज़े खजूर के मुकाबले सूखे खजूर में रेशों की मात्रा अधिक होती है। खजूर में पौष्टिक तत्व काफी मात्रा में होते हैं। इसके सेवन से ग्लुकोज और फ्रक्टोज के रूप में नैसर्गिक शक्कर हमारे शरीर को मिलती है। इस तरह की शक्कर शरीर में शोषण के लिए तैयार रहती है, इसलिए यह आम शक्कर से अच्छी होती है। रमज़ान के पवित्र महिने में खजूर खा कर ही उपवास की समाप्ति की जाती है।

स्वास्थ्य शिक्षण

मक्का का पौष्टिक दैनिक आहार

● डॉ. अल्पना शर्मा ● डॉ. मृगेन्द्र सिंह ● डॉ. बी. के. प्रजापति
● गुरूप्रीत गांधी ● दीपक चौहान ● भागवत प्रसाद पन्द्रे
कृषि विज्ञान केन्द्र, शहडोल

पौष्टिक लड्डू:

सामग्री- मक्का आटा - 100 ग्राम, चना बेसन- 50 ग्राम, मूंगफली - 50 ग्राम, तिल 50 ग्राम, घी या तेल - 85 ग्राम, शक्कर - 100 ग्राम।

विधि:- 1. मक्का आटा, बेसन को अलग-अलग सुनहरा भूरा रंग होने तक घी में भून लें।

2. मूंगफली को भूनकर छिलका निकाल लें।

3. तिल को भून लें।

4. फिर सारी सामग्री को मिलाकर इसमें पिसी शक्कर मिलाकर लड्डू बांध लें।

मक्का की खीर:-

सामग्री- मक्का दलिया- 20 ग्राम, दूध - 250 मिली, शक्कर-20 ग्राम, इलायची।

विधि:-दूध उबाल लें। इसमें मक्के की दलिया डाल कर धीमी आंच पर पकायें इसमें इलायची पाउडर व शक्कर मिला दें।

मक्के की खिचड़ी:-

सामग्री- मक्के की दलिया - 50 ग्राम, घी-10 ग्राम, नमक-1 ग्राम, हल्दी पाउडर -1 ग्राम, जीरा-1 चम्मच, पानी-450 मिली, मूंग दाल - 50 ग्राम, हरी मिर्ची-1 ग्राम, धनियां स्वादानुसार।

विधि:- कुकर में तेल गर्म करके इसमें जीरा, मिर्च का बघार दें। इसमें दाल, मक्के की दलिया भून लें और हल्दी, नमक, पानी, डालकर पका लें।

मक्के का मीठा दलिया:-

सामग्री:- मक्का का दलिया-50 ग्राम, पानी-200 मिली, दूध-150 मिली.,शक्कर-15 ग्राम।

विधि:- मक्का के दलिया को भूनकर फिर पानी में अच्छी तरह पकायें। इसमें दूध और शक्कर मिलाकर 5 मिनट और पकायें।

पकोड़ा:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, प्याज-150 ग्राम, लहसुन-5 ग्राम, अदरक-5 ग्राम, मिर्च हरी-5 ग्राम, तेल एवं नमक - जरूरत अनुसार।

विधि:- मक्के के आटे में कटी प्याज, अदरक, मिर्च, लहसुन, और मसाले मिलाकर पानी से घोल बना लें। तेल गर्म होने पर तैयार मिश्रण से पकौड़े बनाकर छान लें।

मीठे पुए:-

सामाग्री:- मक्के का आटा - 150 ग्राम, शक्कर-50 ग्राम, गेहूँ आटा-50 ग्राम, तेल-तलने के लिये।

विधि:- मक्के का आटा एवं गेहूँ के आटे को मिला लें इसमें शक्कर डालकर पानी से घोल बना लें। तैयार घोल की एक-एक चम्मच गर्म तेल में डालकर पुए जैसे तल लें।

मक्के की पूरी:-

सामग्री:- मक्का आटा -100 ग्राम, गेहूँ आटा -100 ग्राम, चना आटा - 100 ग्राम, अजवायन -100 ग्राम, नमक-1 चम्मच, तेल -तलने के लिये।

विधि:- 1. आटे को छन्नी से छान लें और उसमें नमक अजवायन मिलाकर पूरी का कड़ा आटा गूंद लें।

2. छोटे गोले बनाकर पूरी बेलकर सुनहरे होने तक तल लें।

योग से रहें निरोग

जोड़ों का दर्द - सर्दी में ज्यादा उम्र के लोगों में जोड़ों का दर्द या जकड़न आदि की समस्याएं काफी आम होती हैं। इसे दूर करने के लिये सूक्ष्म व्यायाम है जिसमें शरीर के हर जोड़ जिसमें कंधे, कमर, घुटने की गतिविधियां शामिल हैं। इस व्यायाम में सभी ज्वाइंट्स का रोटेशन और लूजिंग करना होता है।

अस्थमा या एलर्जी- अस्थमा या एलर्जी से ग्रस्त लोगों के लिये वाकिंग और ब्रीदिंग पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता है। ब्रीदिंग एक्सरसाइज में डॉग ब्रीदिंग, टाइगर ब्रीदिंग आदि शामिल हैं। यह सभी क्रियाएं श्वांस रोगों के साथ ही डायबिटीज, डिप्रेशन आदि के लिये भी फायदेमंद हैं।

यह है पर्याप्त- स्वस्थ रहने के लिये कम से कम पवन मुक्तासन क्रिया, लेग राइजिंग और सूर्य नमस्कार करना चाहिए। इसके अलावा भुजंगासन, वक्रासन, अर्धमश्चेन्द्रआसन, अर्धचक्रासन, पद्महस्तासन करना चाहिए। साथ ही प्राणायाम नाडी शोधन करना चाहिए। वे लोग जिन्हें चक्कर आते हैं उन्हें अर्धचक्रासन नहीं करना चाहिए।

पाक्षिक पंचांग

29 सितम्बर से 12 अक्टूबर 2025
विक्रम संवत् 2082
आश्विन शुक्ल 7 से कार्तिक कृष्ण 6 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
29	सितम्बर	सोम	आश्विन शुक्ल	7 सरस्वती आव्हान
30	सितम्बर	मंगल	----------	8 महाष्टमी व्रत
1	अक्टूबर	बुध	----------	9 दुर्गा नवमी व्रत
2	अक्टूबर	गुरु	----------	10 विजयादशमी
3	अक्टूबर	शुक्र	----------	11 पापांकुशा एकादशी पंचक 6.37 शाम से
4	अक्टूबर	शनि	----------	12 प्रदोष व्रत, पंचक
5	अक्टूबर	रवि	----------	13 पंचक
6	अक्टूबर	सोम	----------	14 शरद पूर्णिमा, पंचक
7	अक्टूबर	मंगल	----------	15 स्ना.दा. पूर्णिमा पंचक 3.18 रात तक
8	अक्टूबर	बुध	कार्तिक कृष्ण	1/2
9	अक्टूबर	गुरु	----------	3
10	अक्टूबर	शुक्र	----------	4 करवा चौथ व्रत
11	अक्टूबर	शनि	----------	5
12	अक्टूबर	रवि	----------	6 स्कंध षष्ठी व्रत

धामनोद में किसान संगोष्ठी, कृषि प्रदर्शनी संपन्न

(दिलीप दसौंधी, कृषक जगत, मंडलेश्वर)। धामनोद में गत दिनों दो दिवसीय किसान संगोष्ठी एवं कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें निमाड़ क्षेत्र के अलावा प्रदेश के विभिन्न जिलों तथा पड़ोसी राज्यों महाराष्ट्र और गुजरात से भी किसान पहुँचे इस कार्यक्रम में लगभग 600 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कैलाश भायल (बिलवा), श्री जयदेव पाटीदार (अंजड़), श्री शिवजी पाटीदार (सुंद्रेल), श्री विश्राम सिंह पाल (इंदौर), श्री कुंदन सिंह राठौर (दाबड़) थे। इस संगोष्ठी में विभिन्न विशेषज्ञों ने किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी दी।

इंदौर से पधारे एग्रोनॉमिस्ट श्री अनिल सैनी ने सब्जी की आधुनिक खेती में बेड, मल्चिंग, पौधा लगाने की विधि, खाद प्रबंधन और कीटनाशक उपयोग पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया। वहीं पोलन किसान के श्री सागर कोपार्डेकर ने केले की वर्तमान स्थिति, भविष्य और निर्यात योग्य केले की खेती पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी के संचालक एवं प्रगतिशील किसान श्री कृष्णपाल सिंह मौर्य ने टेबल नर्सरी, ड्रिप व मल्चिंग की गुणवत्ता, EC एवं pH का महत्व तथा ड्रोन स्प्रे के फायदे बताए। युवा किसान श्री सत्यम सिंह मौर्य (19 वर्ष) ने सब्जी खेती में पोषक तत्वों की ड्रेंचिंग विधि व सावधानियों पर प्रस्तुति दी। श्री श्याम सिंह ने मृदा स्वास्थ्य और मृदा परीक्षण के महत्व पर उद्बोधन दिया। इस मौके पर कृषक जगत द्वारा श्री सागर को कृषक जगत डायरी एवं अंक भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री धर्मेंद्र पाटीदार, सुंद्रेल ने किया।

कृषि सखियां प्राकृतिक खेती कर बढ़ाएंगी अपनी आय

देवास (कृषक जगत)। कृषि विज्ञान केंद्र, देवास में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत कृषि सखियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम श्री गोपेश पाठक, उप-संचालक (कृषि) एवं श्री राजू बड़वाया, उप-संचालक (उद्यानिकी) के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. आर.पी.शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम में श्री एम.एल.सोलंकी, परियोजना संचालक आत्मा, श्री पंकज ठाकुर, जिला प्रबंधक (कृषि), एन.आर.एल.एम. एवं प्राकृतिक खेती के प्रभारी डॉ. महेंद्र सिंह,वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अन्य वैज्ञानिक गण उपस्थित थे।

श्री सोलंकी ने जानकारी दी कि जिले में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत 30 क्लस्टरों के अंतर्गत 1500 हेक्टेयर में 3750 किसानों को चयनित किया गया है। इन किसानों को तकनीकी जानकारी प्रदान करने हेतु जिले के देवास, बागली एवं कन्नौद विकासखण्ड की 30 कृषि सखियों का भी चयन किया गया है। केंद्र प्रमुख डॉ. शर्मा ने, डॉ. सिंह वरिष्ठ वैज्ञानिक, श्री पाठक, श्री बड़वाया ने सब्जियों एवं फलों में प्राकृतिक खेती के महत्व के बारे में जानकारी दी। श्रीमती नीरजा पटेल, वैज्ञानिक द्वारा पांच दिवसीय प्रशिक्षण में होने वाली गतिविधियों की रूपरेखा के बारे में बताया गया।

दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान के तहत प्रशिक्षण दिया

इंदौर (कृषक जगत)। दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान के अंतर्गत इंदौर जिले के देपालपुर विकासखंड में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में ब्लॉक के पशु चिकित्सा सहायक, पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी एवं मैत्री उपस्थित थे। इन सभी को मास्टर ट्रेनर द्वारा 2 अक्टूबर से 9 अक्टूबर तक चलने वाले दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान के बारे में बताया गया।

इस कार्यक्रम में भोपाल की राज्य स्तरीय जिला नोडल अधिकारी डॉ. सुषमा एक्का विशेष रूप से उपस्थित थीं। उन्होंने दुग्ध समृद्धि संकल्प अभियान के बारे में बताया तथा अभियान को सफल करने के संबंध में निर्देश दिए।

गौ सेवा की अनूठी पहल, 5 बीघा में बोई ज्वार

गायों को मिलेगा हरा चारा और पक्षियों को दाना

इंदौर (कृषक जगत)। इन दिनों गौ सेवा के लिए विभिन्न प्रकल्प चल रहे हैं। गौ शालाओं में भी कई सुविधाएं मुहैया कराई जा रही है, इसके बावजूद गायों के लिए हरे चारे की कमी रहती है। इस स्थिति को देखते हुए ग्राम पंचेड़ टप्पा तहसील नामली जिला रतलाम के राजपुरोहित परिवार ने इस वर्ष खरीफ में सोयाबीन फसल लगाने के बजाय पूरे 5 बीघा ज़मीन में चारे के रूप में ज्वार को लगाया है, जिसका वे गौशालाओं में नि:शुल्क वितरण करेंगे। ज्वार लगाने से जहां गायों को हरा चारा मिलेगा, वहीं पक्षियों को भी दाना मिलेगा। जीव दया के प्रति सेवा और समर्पण का यह प्रयास प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। इनका मानना है कि यदि सभी किसान अपनी ज़मीन के 5-10 प्रतिशत हिस्से में हरे चारे की फसल बोएं तो इससे जहां गायों के पेट की पूर्ति होगी।

पुत्र श्री करुणेश राजपुरोहित ने कृषक जगत को बताया कि ग्राम पंचेड़ में पिता श्री बसंतीलाल राजपुरोहित की तेजाजी मंदिर के सामने करीब 5 बीघा ज़मीन है। गत 30 वर्षों से खेती के साथ गौ सेवा और जीव दया के कार्य कर रहे हैं। इस साल खरीफ में सोयाबीन की बुवाई की चर्चा के दौरान पिताजी एवं माता श्रीकांता राजपुरोहित ने कहा कि गौ वंश के लिए हरे चारे की समस्या है,अत: इस वर्ष ऐसी फसल बोएं, जिससे गौ वंश और पक्षियों दोनों की व्यवस्था हो जाए। फिर सबकी सहमति से पूरे 5 बीघा में ज्वार बोने का फैसला किया।

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
➩ वार्षिक रु. 600/- ➩ दो वर्ष रु. 1000/-
➩ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** - प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....

ग्राम .... पो. ....

डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....

वि.ख. .... तह. ....

जिला .... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य ....

शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....

ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....

ई-मेल ....

मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/

मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

भाकिसं पांढुर्ना ने भी ज्ञापन सौंपा

(उमेश खोड़े, पांढुर्ना)। मध्य प्रदेश के किसानों की ज्वलंत समस्याओं को लेकर भारतीय किसान संघ (भाकिसं), मप्र के आह्वान पर प्रदेश स्तर पर सभी तहसील एवं जिला मुख्यालयों की इकाइयों द्वारा प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इसी कड़ी में भाकिसं पांढुर्ना द्वारा भी मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन तहसीलदार श्री विनय प्रकाश ठाकुर को सौंपा। इस दौरान भाकिसं पांढुर्ना के जिलाध्यक्ष श्री राजकुमार जायसवाल, जिला मंत्री श्री नीरज दुबे, तहसील अध्यक्ष श्री प्रदीप खवसे सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद थे।

17 बिंदु वाले इस ज्ञापन में मुख्यत: कृषि आदान एवं कृषि से जीएसटी पूर्ण रूप से समाप्त करने, कृषि उत्पादों कि आयात - निर्यात नीति किसान हितैषी बनाने, कृषि यंत्रों सहित बीज और दवाइयों पर जीएसटी न्यूनतम करने, जीएम फसल बीजों को भारत में प्रवेश की अनुमति नहीं देने,कपास पर इम्पोर्ट ड्यूटी बहाल करने, भूमि अधिग्रहण कानून में ज़मीन का सिर्फ विकास योजनाओं एवं राष्ट्रीय मुद्दों पर अधिग्रहण करने एवं उसमें समानता लाने, केंद्र की योजनाओं में किसानों के प्रति बैंकों की सही भूमिका के लिए जिला स्तर पर समन्वय अधिकारी नियुक्त करने,कृषि लोन एवं केसीसी को पारदर्शी बनाने और इसे ऑनलाइन करने, मुद्रा लोन की तर्ज़ पर कृषि लोन की प्रक्रिया अपनाने, कृषि कार्य में लगने वाले डीजल को जीएसटी के दायरे में लाने, ग्राम पंचायत स्तर पर वर्षा मापक लगाने, छोटी कक्षाओं में कृषि विज्ञान पढ़ाने एवं सभी जिलों में कृषि कॉलेज खोलने, सभी फसलों की खरीदी समर्थन मूल्य पर करने, किसान सम्मान निधि की राशि को 10 हज़ार रु / हेक्टेयर करने, रासायनिक खाद पर किसानों को सब्सिडी मिलती है, उसी तरह जैविक किसानों को भी प्रोत्साहन राशि देने, फसल बीमा में असफल सेटेलाइट योजना की जगह नेत्रांकन सेवा पुन: लागू करने तथा किसानों को केसीसी लोन 5 लाख तक करने की मांग की गई।

मिलिए अपने क्षेत्र के कृषि आदान विक्रेता से

सिंचाई संसाधनों में गति-राजदीप मशीनरी

नीमच (कृषक जगत)। रतनगढ़ कस्बे में 27 सालों से कृषकों को सिंचाई संसाधन उपलब्ध कराने में राजदीप मशीनरी की अग्रणी भूमिका है। राजदीप मशीनरी के एम कॉम तक शिक्षित संचालक श्री तोलीराम चारण बताते हैं कि फाल्कन कंपनी के उत्पादों से शुरुआत की और धीरे-धीरे अन्य सिंचाई उपकरण उपलब्ध कराये। राजदीप के प्रयासों से आधुनिक कृषि उपकरणों का उपयोग करने का लाभ क्षेत्र के किसानों को मिला जिससे उनकी फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई आर्थिक स्थिति सुधरी। राजदीप मशीनरी सबमर्सिबल,कृषि पाइप,स्प्रिंकलर,ड्रिप आदि के अलावा राजकोट की कंपनी ओरकल पम्प भी किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। श्री चारण ने स्वयं के बल पर क्षेत्र में राजदीप मशीनरी का परचम लहराया। श्री चरण क्षेत्र में सिंचाई रकबे में वृद्धि के लिए बिजली आपूर्ति सुनिश्चित व्यवस्था एवं सौर ऊर्जा के प्रति जागरूकता लाने की आवश्यकता मानते हैं।

अमानक उर्वरक विक्रेता के विरुद्ध एफआईआर

नर्मदापुरम (कृषक जगत)। कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना के निर्देशानुसार जिले में अमानक खाद एवं उर्वरकों के विक्रय पर कठोर कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। उक्त निर्देशों के परिपालन में अमानक उर्वरक का भंडारण एवं विक्रय करने पर, राजपूत कृषि सेवा केंद्र, सिवनी मालवा के प्रोपराइटर हुकुम सिंह राजपूत के विरुद्ध पुलिस थाना सिवनी मालवा में प्राथमिकी दर्ज की गई है। उर्वरक निरीक्षक डॉ. राजीव यादव द्वारा खाद बीज की दुकानों का निरीक्षण के दौरान, सिवनी मालवा में संचालित प्रतिष्ठान-राजपूत कृषि सेवा केंद्र में भंडारित उर्वरक जिंक सल्फेट 33 प्रतिशत (निर्माता कंपनी एमरॉन एग्रो केमिकल्स प्रा.लि.) का नमूना लिया जाकर, उर्वरक में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा की जांच हेतु, उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला उज्जैन को भेजा गया था। इस जिंक सल्फेट की थैली पर उल्लेख अनुसार इसमें जिंक 33 प्रतिशत, सल्फर 15 प्रतिशत पाया जाना था, किंतु उर्वरक गुण नियंत्रण प्रयोगशाला उज्जैन से प्राप्त रिपोर्ट में दोनों ही पोषक तत्व जिंक 0 प्रतिशत, सल्फर 0 प्रतिशत पाया गया है।

राजपूत कृषि सेवा केंद्र में अमानक उर्वरक का भंडारण करने और जिले के किसानों को अमानक उर्वरकों का विक्रय किया जाना पाए जाने पर, उप संचालक कृषि द्वारा उक्त अमानक उर्वरक भंडारण क्रय-विक्रय एवं परिवहन को तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित किया गया और हुकुम सिंह राजपूत के विरुद्ध पुलिस थाना सिवनी मालवा में प्राथमिकी दर्ज किए जाने के निर्देश दिए गए। उर्वरक निरीक्षक द्वारा आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर पुलिस थाना सिवनी मालवा में एफआईआर करवाई गई है।

म.प्र. में वर्षा की स्थिति (मि.मी. में) 1 जून से 26 सितम्बर 2025 तक

जिला	वास्तविक वर्षा	सामान्य वर्षा	सामान्य से अधिक या कम %
म.प्र.	**1125.1**	**940.4**	**20**
पूर्वी म.प्र.			
अनूपपुर	1013.9	985.8	3
बालाघाट	1221.0	1224.4	0
छतरपुर	1324.1	934.6	42
छिंदवाड़ा	1068.0	988.9	8
दमोह	1108.6	1079.1	3
डिंडोरी	1249.7	1169.3	7
जबलपुर	1145.5	1119.5	2
कटनी	1081.2	927.3	17
मंडला	1554.0	1185.4	31
सिंहपुर	1411.5	1045.0	35
निवाड़ी	1326.0	773.9	71
पन्ना	1186.5	1080.5	10
रीवा	997.4	978.8	2
सागर	1124.2	1059.1	6
सतना	1036.7	940.6	10
सिवनी	1280.1	1006.3	27
शहडोल	1055.0	980.6	8
सीधी	1263.7	1034.4	22
सिंगरौली	1159.5	868.9	33
टीकमगढ़	1353.4	904.1	50
उमरिया	1237.6	1065.6	16
उपसंभागीय वर्षा	**1194.4**	**1033.1**	**16**
पश्चिम म.प्र.			
आगर मालवा	992.0	895.1	11
अलीराजपुर	1179.1	861.5	37
अशोकनगर	1420.3	850.4	67
बड़वानी	795.9	656.4	21
बैतूल	945.3	1029.7	-8
भिंड	823.9	609.8	35
भोपाल	1070.8	958.4	13
बुरहानपुर	878.8	728.6	21
दतिया	855.1	739.9	16
देवास	881.7	894.4	-1
धार	835.1	805.2	4
गुना	1660.9	832.8	78
ग्वालियर	1185.0	717.2	65
हरदा	1101.3	1067.9	3
इंदौर	909.7	857.4	6
झाबुआ	920.3	872.2	6
खंडवा	762.2	777.8	-2
खरगौन	700.9	705.8	-1
मंदसौर	856.1	820.6	4
मुरैना	938.6	641.4	46
नर्मदापुरम	1340.9	1248.7	7
नीमच	1088.9	770.4	41
रायसेन	1552.4	1076.2	44
राजगढ़	1378.3	887.7	55
रतलाम	1233.9	904.7	36
सीहोर	1011.4	1060.3	-5
शाजापुर	727.8	879.1	-19
श्योपुर	1437.7	664.9	116
शिवपुरी	1396.5	783.1	78
उज्जैन	841.4	877.6	-4
विदिशा	1111.2	1016.8	9
उपसंभागीय वर्षा	**1071.8**	**869.1**	**23**

स्त्रोत: भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम केन्द्र, भोपाल

कैरा टेक्नोप्लास्ट प्रा.लि., खरगोन
आपकी समृद्धि हमारी प्राथमिकता
हमारे यहां पर ड्रिप में फ्लैट और राउण्ड एचडीपीई व स्प्रिंकलर पाईप, एचडीपीई क्वाइल, लपेटा पाईप एवं रेन पाईप वर्जिन एवं उच्च क्वालिटी में बनाये जाते हैं। **सम्पर्क** - निरंजन नगर, कसरावद रोड, खरगोन,
मो. : 7880017028, 7880017021
मई 25

TerraGlebe Farmers Producer Company Limited
यूरोप में मिर्च निर्यात (एक्सपोर्ट) करने वाला मध्यप्रदेश का पहला किसान उत्पादक संगठन बना 'टेराग्लेब'
अब उसी की तर्ज पर नाबार्ड से गठित FPO निमाड़फ्रेश FPO रसायन मुक्त मसाले का बना मैन्युफैक्चर
ODOP - मिर्च-खरगोन
निमाड़फ्रेश FPO (JV) हरिओम भुरे 8964087240
टेराग्लेब FPO बालकृष्ण पाटीदार 9575524408
जुलाई 26

भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नर्सरी
ISO 9001 : 2015 सर्टिफाईड
किसान हाईटेक ग्रीनहाऊस नर्सरी
द्वारा पपीता, मिर्च, टमाटर, बैंगन, तरबूज, करेला, पत्तागोभी, फूलगोभी आदि सब्जी के पौधे टेबल स्टेण्ड के ऊपर रखकर तैयार किए जाते हैं
सम्पर्क : 9407361901, 9407361902, 9407361903
सहयोगी प्रतिष्ठान : बागवानी बाजार नर्सरी जहां पर फलदार, सजावटी व फारेस्टी पौधों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है। **संपर्क : मो. :** 9407853117, 9407853118, 9407853119, **नर्सरी स्थल : ग्राम-सिरलाय, तह.- बड़वाह 451115, जिला-खरगोन (म.प्र.)**
मार्च 25

मध्यभारत की सबसे बड़ी नर्सरी
तिरुपति ग्रीन हाऊस नर्सरी
देश का सबसे बड़ा पौध भंडार औषधीय, फलदार, सजावटी फूलों के पौधे, इनडोर, टिश्यूकल्चर, क्रीपर, बोन्साई, सक्यूलेन्ट्स, केक्टस, हैंगिंग प्लांट, वर्टीकल प्लांट, लकी बैंबू रेंज, फॉरेस्ट्री प्लांट एवं सब्जियों के पौधों की विस्तृत श्रृंखला में
: आपका स्वागत है :
सिरलाय (बड़वाह) मध्यप्रदेश
www. tirupatinursery.com
email : tirupatinursery@gmail.com
मो. : 9479457720/99/63/86/96/16/17/13/31/51
मार्च 2025

पटवारी एग्रो एजेन्सी
:: वितरक ::
◆ कलश सीड्स लि. ◆ बायोस्टेट इंडिया लि. ◆ बॉयर कॉप साइंस ◆ धानुका एग्रीटेक लि.
◆ एफ.एम.सी. इंडिया प्रा.लि. ◆ घरड़ा केमिकल्स लि. ◆ अतुल एग्रीटेक लि.
◆ रामा फॉस्फेट्स लि. ◆ जी.एन.एफ.सी. ◆ इंसेक्टीसाइड्स इंडिया लि. ◆ बीएएसएफ
◆ डयूपॉन्ट इंडिया लि. ◆ क्रिस्टल क्राप साइंस ◆ डाउएग्रो साइंसेस ◆ एग्री सर्च इंडिया
◆ मंशा इंडिया लि. ◆ स्वाल कार्पोरेशन लि. ◆ मेघमनी आर्गेनिक्स ◆ अदामा इंडिया लि.
17, विशाल टॉवर, इंदिरा काम्पलेक्स, नवलखा चौराहा, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 2403694, 2400412, मो. : 9425077083

कई प्रकार की फसलों के लिए एकमात्र स्वचलित गियर ड्राईव
वरदान
मल्टीक्रॉप पॉवर रीपर
वरदान एग्री सॉल्यूशन्स प्रा.लि.
63, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर-452015 (म.प्र.) फोन: 0731-4970600, 6264916090.

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ
व्यक्तिगत क्लासीफाइड
विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-
■ बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि ■ बीज ■ औषधीय फसल
विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक ■ अधिकतम 25 शब्द
■ अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक
डिस्प्ले क्लासीफाइड
विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण जीएसटी 5%अतिरिक्त
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.
कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्राएं, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagatindia
@krishakjagat @krishak_jagat

महिंद्रा का सबसे एडवांस्ड ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च

मिलेगा दमदार mBULL इंजन और 6 साल की वारंटी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। भारत के अग्रणी ट्रैक्टर निर्माता महिंद्रा एंड महिंद्रा ने किसानों के लिए अपनी YUVO सीरीज का विस्तार करते हुए नया ट्रैक्टर YUVO TECH+ 475 DI लॉन्च कर दिया है। यह ट्रैक्टर 42 हॉर्सपावर की श्रेणी में आता है और इसे खासतौर पर किसानों की आधुनिक जरूरतों और बदलती कृषि तकनीकों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। ट्रैक्टर में महिंद्रा का नया, दमदार और ईंधन-कुशल mBULL इंजन दिया गया है, जो कठिन परिस्थितियों और भारी उपकरणों के साथ भी उत्कृष्ट प्रदर्शन देता है। इस ट्रैक्टर की एक और बड़ी खासियत है कि कंपनी इस पर 6 साल की इंडस्ट्री-बेस्ट वारंटी दे रही है, जो भारतीय कृषि यंत्र बाजार में भरोसे का नया मानक स्थापित करती है। इस ट्रैक्टर का लॉन्च मुख्य रूप से उन किसानों को ध्यान में रखकर किया गया है, जो उच्च उत्पादकता, कम ईंधन खपत, और बेहतर आराम की तलाश में हैं।

दमदार प्रदर्शन वाला mBULL इंजन- Mahindra YUVO TECH+ 475 DI में दिया गया है नया 2980 सीसी का mBULL 3-सिलेंडर इंजन, जो अधिकतम 191 Nm टॉर्क और 28% बैकअप टॉर्क देता है। यह इंजन हाई-क्यूबिक कैपेसिटी वाला है, जो खेतों में गहरे और भारी उपकरणों जैसे रोटावेटर, कल्टीवेटर, बेलर, ट्रॉली आदि के साथ काम करने में बेहतर तालमेल और ताकत प्रदान करता है। इस इंजन की खास बात यह है कि इसमें वॉटर सेपरेटर तकनीक दी गई है, जो डीज़ल में मौजूद पानी और अशुद्धियों को अलग करता है। इससे इंजन की परफॉर्मेंस बेहतर होती है और इसकी उम्र लंबी होती है।

मल्टी-स्पीड PTO और ईंधन बचत- महिंद्रा YUVO TECH+ 475 DI में मल्टी-स्पीड PTO (MSPTO) दी गई है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार PTO की स्पीड सेट कर सकते हैं। इससे विभिन्न कृषि उपकरणों को चलाने में लचीलापन मिलता है और ईंधन की भी बचत होती है। ट्रैक्टर में डुअल क्लच, 12 फॉरवर्ड और 3 रिवर्स गियर दिए गए हैं, जो कठिन ज़मीन और भारी कार्यों में ट्रैक्टर को नियंत्रित और प्रभावी तरीके से चलाने में मदद करते हैं।

ऑपरेटर के आराम और कंट्रोल का ध्यान- महिंद्रा ने YUVO TECH+ 475 DI को सिर्फ ताकतवर ही नहीं, बल्कि आरामदायक और उपयोगकर्ता-मित्रवत भी बनाया है। इसका विस्तृत ऑपरेटर प्लेटफॉर्म, पावर स्टीयरिंग, और एर्गोनॉमिक कंट्रोल्स लंबे समय तक काम करने वाले किसानों के लिए बेहद सुविधाजनक हैं।

6 साल की भरोसेमंद वारंटी-Mahindra YUVO TECH+ 475 DI ट्रैक्टर पर कंपनी दे रही है 6 साल या 6000 घंटे की वारंटी (जो भी पहले हो)। यह इंडस्ट्री में सबसे लंबी वारंटी मानी जा रही है, जिससे किसानों को लंबे समय तक मेंटेनेंस और सर्विस का भरोसा मिलता है।

फिलहाल इन राज्यों में उपलब्ध- नई तकनीक और दमदार इंजन से लैस यह ट्रैक्टर आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, कर्नाटक और महाराष्ट्र के चुनिंदा महिंद्रा डीलरशिप्स पर उपलब्ध है। जल्द ही इसे देश के अन्य हिस्सों में भी लॉन्च किए जाने की योजना है।

अशोक लेलैंड कर रही है मध्य भारत में विस्तार की तैयारी

25 किलोमीटर पर सर्विस टचपॉइंट की व्यवस्था के सक्रिय प्रयास

इंदौर (कृषक जगत)। हिंदुजा समूह की प्रमुख भारतीय कंपनी और देश की अग्रणी वाणिज्यिक वाहन विनिर्माता, अशोक लेलैंड, मध्य प्रदेश और मध्य भारत के बड़े हिस्से में अपनी मौजूदगी बढ़ा रही है। कंपनी इस क्षेत्र की शानदार आर्थिक वृद्धि, बुनियादी ढांचे के विकास में तेज़ी और वाणिज्यिक वाहनों की बढ़ती मांग का लाभ उठाना चाहती है, ताकि उसकी बाज़ार उपस्थिति बढ़े और इस क्षेत्र की विशिष्ट परिवहन ज़रूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सके। साथ ही, कंपनी सर्वश्रेष्ठ हल्के वाणिज्यिक वाहन (एलसीवी) उत्पाद और सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अशोक लेलैंड ने फिलहाल मध्य भारत में 21 डीलरों के साथ साझेदारी की है। कंपनी 90 से ज़्यादा सर्विस वर्कशॉप का परिचालन करती है और मध्य भारत में 600 से ज़्यादा एएलटीटी (अशोक लेलैंड प्रशिक्षित तकनीशियन) के साथ सक्रिय परिचालन कर रही है। कंपनी यह सुनिश्चित कर रही है कि हर 50 किलोमीटर पर एक सर्विस टचपॉइंट उपलब्ध हो और इस तरह इस क्षेत्र में बेजोड़ सुविधा तथा ग्राहक सहायता प्रदानकी जा रही है। हम अगले एक साल में यह सुविधा बढ़ाकर हर 25 किलोमीटर पर सर्विस टचपॉइंट की व्यवस्था करने की दिशा में सक्रिय प्रयास कर रहे हैं।

अशोक लेलैंड नवोन्मेष और उन्नत प्रौद्योगिकी के ज़रिये विकास को गति दे रहा है, जिससे वाणिज्यिक वाहन उद्योग में उसका नेतृत्व मज़बूत हो रहा है। कंपनी बढ़ती बाज़ार हिस्सेदारी और हल्के वाणिज्यिक वाहनों के मज़बूत पोर्टफोलियो के साथ, मध्य भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए रणनीतिक रूप से तैयार है। अशोक लेलैंड अपने विकास और विस्तार के साथ-साथ मध्य भारत में ग्राहकों की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए उल्लेखनीय उत्पाद तथा सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है।

अशोक लेलैंड के एलसीवी बिजनेस के प्रमुख, श्री विप्लव शाह ने कहा, 'मध्य प्रदेश के साथ-साथ मध्य भारत क्षेत्र हमेशा से हमारे लिए प्रमुख बाज़ार रहा है। हमारी एलसीवी रेंज पांच प्रमुख मूल्य - अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ माइलेज, पेलोड, लोडिंग दायरा, आराम और विश्वसनीयता - प्रदान करती है। अशोक लेलैंड का अपटाइम गारंटी प्रोग्राम 'भरोसा' और उद्योग में पहली बार 5 साल, 2 लाख किमी की वारंटी हमारे ग्राहकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को और दर्शाती है। हम मध्य भारत क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जो हमारे लिए एक प्रमुख बाज़ार है। हम इस क्षेत्र की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उच्च-गुणवत्ता वाले एलसीवी उत्पाद और विस्तारित नेटवर्क प्रदान करने के प्रति प्रतिबद्ध हैं।'

रासायनिक उर्वरक का कोई स्थायी समाधान नहीं, संतुलित उपयोग ही आवश्यक : श्री मोहंती

देश की प्रसिद्ध उर्वरक निर्माता कम्पनी हिंदुस्तान उर्वरक रसायन लि. (एचयूआरएल) द्वारा गत दिनों इंदौर में एनुअल डीलर कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि कम्पनी के एमडी डॉ. एसपी मोहंती थे। इस कॉन्फ्रेंस में स्टेट मैनेजर श्री आशीष विजय, मार्केटिंग मैनेजर श्री स्नेहिल श्रीवास्तव के अलावा एग्रो फॉस के श्री राजकुमार सुहाने सहित बड़ी संख्या में डीलर मौजूद थे।

(सचिन बोन्द्रिया)

इंदौर (कृषक जगत)। देश की अग्रणी उर्वरक निर्माता कंपनी हिंदुस्तान उर्वरक एंड रसायन लि. (एचयूआरएल) के प्रबंध निदेशक श्री एस.पी. मोहंती ने कहा कि रासायनिक उर्वरकों का कोई स्थायी समाधान नहीं है, लेकिन खाद्य सुरक्षा और मिट्टी के स्वास्थ्य की दृष्टि से इनका विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग ही समय की मांग है। वे इंदौर में आयोजित कंपनी की एनुअल डीलर कॉन्फ्रेंस के अवसर पर कृषक जगत से विशेष चर्चा कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि देश में किसानों द्वारा यूरिया का अत्यधिक उपयोग चिंता का विषय है। वर्ष 2023-24 और 2024-25 में पिछले वर्षों की तुलना में लगभग 25 लाख टन अधिक यूरिया का उपयोग किया गया, जिससे मिट्टी का रासायनिक संतुलन प्रभावित हो रहा है। श्रीलंका का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वहां 100 प्रतिशत जैविक खेती अपनाने से भुखमरी की स्थिति बन गई थी और भारत को वहां लाखों टन यूरिया भेजना पड़ा। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत को भी केवल जैविक या केवल रासायनिक खेती पर निर्भर रहने की बजाय दोनों तरह की खादों का संतुलित प्रयोग करना चाहिए।

डॉ. मोहंती ने एचयूआरएल की प्रगति और भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कंपनी के गोरखपुर, बरौनी और सिंदरी स्थित तीनों प्लांट आधुनिक तकनीक से लैस हैं और 105 प्रतिशत उत्पादन क्षमता पर कार्यरत हैं। इनकी कुल उत्पादन क्षमता 3.81 मिलियन टन यूरिया है। पिछले वित्तीय वर्ष में कंपनी का टर्नओवर रू. 17,000 करोड़ और लाभ रू. 1,878 करोड़ रहा। उन्होंने कहा कि इस वर्ष कंपनी 40 लाख टन यूरिया का उत्पादन करने जा रही है। साथ ही 7 लाख टन डीएपी, एनपीके और एमओपी का आयात भी किया गया है। कंपनी का लक्ष्य अगले 5 वर्षों में देश की नंबर वन उर्वरक कंपनी बनना है।

मध्यप्रदेश में यूरिया संकट की स्थिति पर उन्होंने किसानों को आश्वस्त किया कि जल्द ही यह स्थिति सामान्य होगी। उन्होंने प्रधानमंत्री प्रणाम योजना का उल्लेख करते हुए कहा कि यह योजना वैकल्पिक उर्वरकों और जैविक खेती को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसके अंतर्गत यदि किसान रासायनिक उर्वरक का उपयोग कम करते हैं, तो उससे बची सब्सिडी का 50 प्रतिशत हिस्सा राज्य सरकार को मिलता है। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि आंध्र प्रदेश में एक बोरी यूरिया कम उपयोग करने वाले किसानों को रू. 800 की प्रोत्साहन राशि सीधे उपलब्ध कराई जा रही है।

नैनो यूरिया के विषय पर डॉ. मोहंती ने स्वीकार किया कि प्रारंभिक स्तर पर इसके क्रियान्वयन में कुछ कमियां रहीं, लेकिन अब सुधार की दिशा में तेजी से काम हो रहा है। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को बेहतर बनाने के लिए अमेरिकी कंपनी से एचयूआरएल का समझौता हो चुका है और निकट भविष्य में इसे गोरखपुर यूनिट में स्थापित किया जाएगा।

डीलर नेटवर्क की अहमियत पर उन्होंने कहा कि डीलर कंपनी की धमनी हैं, जिनके माध्यम से ही उत्पाद गांव-गांव तक पहुंच पाता है। उन्होंने किसानों से अपील की कि वे यूरिया और डीएपी का विवेकपूर्ण उपयोग करें, ताकि न केवल उत्पादन क्षमता बढ़े बल्कि मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण संरक्षण भी सुनिश्चित हो सके।

कृषि-रसायन क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का आह्वान : श्री गडकरी

CCFI की 62वीं वार्षिक आमसभा में संगठन की मजबूती और उद्योग की वैश्विक स्थिति पर जोर

नई दिल्ली (कृषक जगत)। क्रॉप केयर फेडरेशन ऑफ इंडिया (CCFI) की 62वीं वार्षिक आमसभा (AGM) नई दिल्ली में सम्पन्न हुई। इसमें नीति-निर्माताओं, उद्योग नेताओं और किसान संगठनों ने भाग लिया। मुख्य अतिथि केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा कि कृषि भारत की आत्मनिर्भरता का आधार बनना चाहिए। उन्होंने कृषि का GDP योगदान 18 प्रतिशत से बढ़ाकर 26 प्रतिशत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री गडकरी ने कहा कि भारत का कृषि-रसायन उद्योग 70,000 करोड़ रुपये का है, जिसमें से 51 प्रतिशत निर्यात होता है। यह गर्व की बात है लेकिन कच्चे माल पर निर्भरता घटाना ज़रूरी है। उन्होंने गन्ना व मक्का से बढ़ते एथनॉल उत्पादन और तेलहन अनुसंधान को किसानों की आय बढ़ाने का प्रमुख साधन बताया।

संगठन कार्यकारिणी

सभा में चुनाव भी सम्पन्न हुए। श्री दीपक शाह (SML) को पुनः चेयरमैन चुना गया, जबकि श्री राजेश अग्रवाल (IIL) और श्री ओमबीर सिंह त्यागी (UPL) उपाध्यक्ष बने। यह पुनर्नियुक्तियाँ संगठन की स्थिरता और मज़बूत नेतृत्व का संकेत हैं। श्री शाह चेयरमैन CCFI और एसएमएल लि., ने कहा, 'भारत का कृषि-रसायन उद्योग हर साल 40,000 करोड़ रुपये से अधिक का निर्यात करता है और घरेलू बाज़ार भी उतना ही बड़ा है। हम 600 अरब डॉलर के खाद्य उत्पादन में योगदान देते हैं। हमारे उत्पाद दुनिया में सर्वोत्तम माने जाते हैं और हमारे सदस्य 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के विज़न को आगे बढ़ा रहे हैं।'

नवाचार और चुनौतियाँ

CCFI के चेयरमैन एमेरिटस श्री आर.डी. श्रॉफ ने कहा कि भारतीय निर्माता दुनिया में सबसे कम लागत पर श्रेष्ठ नवाचार कर रहे हैं और किसानों को सस्ते दाम पर समाधान उपलब्ध करा रहे हैं। **श्री राजेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष CCFI और एमडी, इनसेक्टिसाइड्स इंडिया लि.,** ने भारत को 'अवसरों की भूमि' बताते हुए कहा, '140 करोड़ की आबादी में से 70 करोड़ युवा हैं। भारत की प्रगति को कोई नहीं रोक सकता। अनुसंधान और विनिर्माण में भारी निवेश ने हमें वैश्विक स्तर पर चैंपियन सेक्टर बना दिया है। जो हम उत्पादन करते हैं, वह न केवल घरेलू ज़रूरतें पूरी करता है बल्कि निर्यात की भी अपार संभावना है।'

कृषि आयुक्त डॉ. पी.के. सिंह ने 2047 के लिए तैयारी की ज़रूरत बताते हुए फसल विविधीकरण और पोषण सुरक्षा पर ज़ोर दिया। उद्योग की ओर से **सुश्री कोमल शाह भुखनवाला** ने मिट्टी की सेहत, नाइट्रेट प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन को सबसे बड़ी चुनौतियाँ बताते हुए कहा कि भविष्य जैविक उत्पादों और हरित रसायनों का है। भारतीय किसान समाज के अध्यक्ष **श्री कृष्ण बीर चौधरी** ने कहा कि आज भारतीय किसान को किफायती और गुणवत्तापूर्ण कृषि-रसायन उपलब्ध हैं और यही आत्मनिर्भरता की मज़बूत नींव है। इस अवसर पर एमको के चैयरमेन एवं पीएमएफएआई के प्रेसीडेंट श्री प्रदीप दवे विशेष रूप से उपस्थित थे।

सहकारिता क्षेत्र में माईक्रो फायनेंस के प्रयास सराहनीय : श्री धर्माधिकारी

अपेक्स बैंक एवं सहकारी विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में संगोष्ठी आयोजित

भोपाल (कृषक जगत)। सहकारी विचार मंच के अध्यक्ष मध्यप्रदेश के पूर्व सचिव, सहकारिता श्री व्ही.जी. धर्माधिकारी ने कहा कि मध्यप्रदेश में सहकारिता के क्षेत्र में बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध है और आज के परिदृश्य में उत्तम ढंग से उपलब्ध तकनीक के माध्यम से सूक्ष्म वित्त (माईक्रो फायनेंस) के क्षेत्र में अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का जो काम किया जा रहा है, वह अत्यन्त सराहनीय है। अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिता वर्ष, 2025 के दौरान अपेक्स बैंक एवं सहकारी विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में समन्वय भवन में बैंकिंग क्षेत्र में नये परिवेश में राष्ट्रीयकृत एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के सामने सहकारी बैंकों के लिए उपस्थित चुनौतियों पर आयोजित संगोष्ठी में यह विचार व्यक्त किये।

अपेक्स बैंक के प्रबंध संचालक श्री मनोज गुप्ता ने बताया कि मैंने अपेक्स बैंक में विगत लगभग डेढ़ वर्ष के दौरान बेहतर मानव संसाधन उपलब्ध कराने की दिशा में प्रयास किए हैं, जिन्हें म.प्र.शासन के सहयोग से पूर्ण करने में मुझे सफलता भी प्राप्त हुई है और अपेक्स बैंक व जिला बैंकों के लिये नवागत अधिकारियों व कर्मचारियों को बैंकिंग व अन्य समस्त प्रकार के प्रशिक्षण के माध्यम से पारंगत करने हेतु भी हम प्रयासरत हैं।

उचित प्रबंधन के माध्यम से किस प्रकार अधिक से अधिक लोगों को माईक्रो फाईनेंस करते हुए सहकारी आन्दोलन से जोड़कर अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को सूक्ष्म वित्त सुविधा का लाभ प्रदान किया जा सके, इस विषय पर मैनिट की सहायक प्राध्यापक डॉ. जागृति गुप्ता ने कहा कि मध्यप्रदेश में विविध संस्कृति एवं बोलचाल क्षेत्रीय आधार पर विद्यमान हैं, अत: उपयुक्त होगा कि सेल्फ हेल्प ग्रुप (एस.एच.जी) एवं अन्य समूहों के माध्यम से गरीब तबके तक सूक्ष्म वित सहायता की सुविधा आंगनबाड़ियों, एनजीओ एवं अन्य लोकल समूह के कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करके प्रदान करायी जा सकती है। उन्होंने कहा कि सूक्ष्म वित्त (माईक्रो फायनेंस) ने सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान को प्रत्यक्ष रूप से जन्म दिया है तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के परिवर्तन को तीव्र व स्थायी रूप से गति भी प्रदान की है। संगोष्ठी का संचालन अपेक्स बैंक ट्रेनिंग कालेज के प्राचार्य श्री पी.एस.तिवारी द्वारा एवं आभार प्रदर्शन अपेक्स बैंक के सेवानिवृत्त महाप्रबंधक श्री एस.के.गुप्ता ने किया।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन® ड्रिप
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!®
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!